उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं

ACCREDITED WITH GRADE B++ NAAC | भारतीय पुनर्वास परिषद् | UGC 12-B Recognised | NCVET Approved | AICET Approved | NCTE Approved

उड़ान

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की उड़ान

जुलाई - दिसंबर 2025 (सयुक्तांक)

www.uou.ac.in

Follow us on:
/uoulive

कुलपति की कलम से...

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की गृह पत्रिका उड़ान का सयुतांक (जुलाई-दिसम्बर) प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है| यह अंक पिछले छः माह की विश्वविद्यालय की अकादमिक यात्रा का एक वातायन है| इस वातायन से हम विश्वविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों की एक संक्षित रुपरेखा महसूस कर सकते हैं|

आज विश्व नित नवीन परिवर्तन से संचालित/गतिशील हो रहा है| तकनीक ने मनुष्य सभ्यता की गति को एक ओर जहाँ बढ़ा दिया है, वहीं उसके सामने कई प्रकार के प्रश्न भी खड़े कर दिए हैं| कृत्रिम बुद्धिमत्ता और चैट जीपीटी जैसी तकनीकी सुविधाएँ हमारी सभ्यता और अकादमिक क्रिया-कलापों को गहरे प्रभावित कर रही हैं| ऐसी स्थिति में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की विकास यात्रा हमारे लिए यह आश्वस्ति है कि समाज और शिक्षार्थियों के हित में विश्वविद्यालय की पहुँच और कार्य किस प्रकार बड़े प्रस्थान हो सकते हैं|

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय शिक्षार्थी केंद्रित विश्वविद्यालय है| शिक्षार्थियों के हितार्थ विश्वविद्यालय ने विभिन्न प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय व संस्थाओं के साथ शैक्षिक करार किये हैं| आई.आई.टी रुड़की, कुमाऊं विश्वविद्यालय के साथ ही बंगाल इंजीनियर, कुमाऊँ रेजिमेंट आदि के साथ विश्वविद्यालय के समझौता ज्ञापन (एमओयू) हुए| इस समझौता ज्ञापन का लाभ निश्चित ही विश्वविद्यालय के शिक्षार्थियों को मिलेगा| इसी प्रकार विश्वविद्यालय ने कैदियों को उच्च शिक्षा से जोड़ने की पहल भी की है| इससे शिक्षार्थियों को नए-नए पाठ्यक्रम उपलब्ध होंगे और वे व्यावसायिक व रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम का लाभ उठा सकेंगे| विश्वविद्यालय द्वारा सेना के जवानों को उच्च शिक्षा से जोड़ने की पहल भी हमारी सामुदायिक व शैक्षिक प्रतिबद्धता का द्योतक है| विश्वविद्यालय चाहता है कि सेना के जवान अपने राष्ट्रीय कर्तव्य के साथ ही शिक्षा की मुख्यधारा से भी जुड़ें| विश्वविद्यालय को इस बीच यूजीसी की 12-बी की मान्यता प्राप्त हुई| इस मान्यता के पश्चात विश्वविद्यालय शोध व नवाचार की दिशा में तीव्र गति से आगे बढ़ सकेगा| इसी प्रकार NCVET की मान्यता से विश्वविद्यालय स्किल पाठ्यक्रम प्रारंभ कर सकेगा| यह मान्यता प्राप्त करने वाला उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय राज्य का प्रथम विश्वविद्यालय है|

शोध को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शोधार्थियों को फेलोशिप प्रदान करने के प्रस्ताव को भी अनुमोदित किया गया। इस फेलोशिप के माध्यम से पीएच.डी एवं अन्य शोध कार्यक्रमों से जुड़े विद्यार्थियों को विभिन्न संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे, जिससे गुणवत्तापूर्ण शोध को बढ़ावा मिलेगा। विश्वविद्यालय परिसर में टाइप-3 एवं टाइप-4 आवासों के निर्माण हेतु आवश्यक प्रक्रिया की गई| विश्वविद्यालय के परीक्षा भवन व शिक्षक आवास का निर्माण कार्य तीव्रता से चल रहा है| विश्वविद्यालय की 13 विद्याशाखाओं हेतु छः भवनों का निर्माण कार्य भी उतरोत्तर गतिशील है|

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने अपने सामजिक व शिक्षार्थी हित की नीति के अनुरूप वार्षिक प्रतिवेदन पर आधारित पुस्तकों के निशुल्क वितरण का कार्य भी किया है| विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रकोष्ठ की स्थापना की दिशा में भी विश्वविद्यालय प्रयासरत है| शिक्षार्थियों के हित को देखते हुए विश्वविद्यालय ने विश्वविद्यालय की वेबसाइट को हिंदी में करने का निर्णय भी किया है|

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय 12 जनवरी, 2026 को अपने दशम दीक्षांत समारोह का आयोजन कर रहा है| इस दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति ले. जनरल श्री गुरमीत सिंह जी कर रहे हैं| इस दीक्षांत समारोह में 2024-25 में उत्तीर्ण छात्रों को उपाधि प्रदान की जा रही है| दीक्षांत समारोह का नियमित आयोजन विश्वविद्यालय की छात्र केंद्रीयता का ही सूचक समझा जा सकता है| इसी प्रकार इस अवधि में विश्वविद्यालय में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसकी संक्षित झलक आपको इस अंक में देखने को मिलेगी| विश्वविद्यालय ने दूरस्थ शिक्षा प्रसार तथा स्वयं पोर्टल के पाठ्यक्रम में भी छलांग लगाई है| इस वर्ष विश्विद्यालय में पिछले 20 वर्षों की अवधि में जुलाई सत्र में लगभग दो हजार अधिक प्रवेश हुए हैं| राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को लागू कर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी भूमिका और उपस्थिति को विश्वविद्यालय रेखांकित कर रहा है|

मैं सभी शिक्षकों, अशिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों एवं शिक्षार्थियों का विश्वविद्यालय के विकास में संलग्न रहकर इसे राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर का विश्वविद्यालय बनाने के लिए संकल्प लेने का आह्वान करता हूँ|

उड़ान का संयुक्तांक जुलाई-सितम्बर व अक्टूबर-दिसम्बर प्रकाशित किया जा रहा है| इससे विश्वविद्यालय स्तर पर नवाचार, प्रवेश हेतु प्रचार-प्रसार, कार्य की दक्षता तथा पारदर्शिता को प्रभावित करने वाले अनेकानेक कार्य प्रदर्शित हो रहे हैं| उड़ान के इस अंक के प्रकाशन हेतु मैं इसके संपादक मण्डल से जुड़े सभी सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ| आशा है यह अंक आप सबको पसंद आएगा|

प्रो नवीन चन्द्र लोहनी
कुलपति

संपादकीय...

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय : समावेशी शिक्षा की नई उड़ान

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने बीते छह महीनों में यह सिद्ध कर दिया है कि दूरस्थ शिक्षा केवल एक वैकल्पिक व्यवस्था नही, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और समावेशी विकास का सशक्त माध्यम भी है। विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ इस अवधि में न केवल अकादमिक विस्तार का प्रतीक बनीं, बल्कि विश्वविद्यालय ने यह भी दर्शाया कि उच्च शिक्षा समाज के हर वर्ग तक पहुँच सकती है—चाहे वह सीमा पर तैनात सैनिक हों, शोध और नवाचार के केंद्र आईआईटी रुड़की जैसे संस्थान हों या फिर समाज के हाशिये पर खड़े वे बंदी, जिन तक शिक्षा की रोशनी पहुँचना आज भी एक चुनौती मानी जाती है।

सेना, आईआईटी रुड़की तथा राज्य की विभिन्न जेलों के साथ किए गए समझौता ज्ञापनों (MoU) ने विश्वविद्यालय की दूरदृष्टि और सामाजिक उत्तरदायित्व को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है। इन पहलों के माध्यम से विश्वविद्यालय ने यह संदेश दिया है कि शिक्षा किसी भी परिस्थिति में रुकनी नहीं चाहिए और न ही किसी वर्ग विशेष तक सीमित रहनी चाहिए। कैदियों तक उच्च शिक्षा की पहुँच, वास्तव में, सुधार और पुनर्वास की दिशा में एक मानवीय और प्रगतिशील कदम है। इसके साथ ही, पूरे प्रदेश में प्रवेश प्रक्रिया को प्रभावी बनाने और दूरस्थ शिक्षा को घर-घर तक पहुँचाने के लिए आयोजित प्रचार-प्रसार एवं जागरूकता कार्यक्रमों ने सकारात्मक परिणाम दिए हैं। वर्तमान शैक्षिक सत्र में छात्र संख्या में हुई वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि विश्वविद्यालय की योजनाएँ और प्रयास जनविश्वास अर्जित कर रहे हैं। यह वृद्धि केवल आँकड़ों की नहीं, बल्कि शिक्षा के प्रति बढ़ती आकांक्षाओं और विश्वविद्यालय की विश्वसनीयता की भी कहानी कहती है।

वर्ष 2025 विश्वविद्यालय के लिए विशेष महत्व का रहा। इस वर्ष जब उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने अपने 20 वर्ष पूरे किए। 31 अक्टूबर को स्थापना दिवस तथा 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यक्रमों ने विश्वविद्यालय के गौरवशाली सफर, उपलब्धियों और भविष्य की दिशा पर आत्ममंथन का अवसर प्रदान किया। इन आयोजनों ने यह भी स्पष्ट किया कि विश्वविद्यालय केवल शैक्षिक संस्थान नहीं, बल्कि विचार, संस्कृति और सामाजिक चेतना का एक सक्रिय केंद्र है।

राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर आयोजित अकादमिक एवं सामाजिक गतिविधियों से जुड़े कार्यक्रमों ने विश्वविद्यालय की पहचान को और सुदृढ़ किया है। शोध, संवाद, सामाजिक सरोकार और ज्ञान-विनिमय के ये मंच विश्वविद्यालय को समाज से जोड़ते हैं और उसे समय की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर विकसित होने की प्रेरणा देते हैं।

'उड़ान' के इस अंक के माध्यम से हम यह विश्वास व्यक्त करते हैं कि उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय आने वाले समय में भी नवाचार, समावेशन और गुणवत्ता के मूल मंत्र के साथ शिक्षा की इस उड़ान को और ऊँचाइयों तक ले जाएगा। यह उड़ान केवल विश्वविद्यालय की नहीं, बल्कि उन हजारों शिक्षार्थियों की भी है, जिनके सपनों को यह संस्थान निरंतर पंख दे रहा है।

प्रो.(डॉ.) राकेश चन्द्र रयाल
प्रधान संपादक

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने संभाला कार्यभार

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के नये कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने 24 जुलाई को विश्वविद्यालय में आयोजित एक समारोह में यह जिम्मेदारी संभाली। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे प्रो. लोहनी एक प्रसिद्ध शिक्षाविद् व शोधकर्ता रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनका 35 वर्ष का लम्बा अनुभव है। इस मौके पर नवनियुक्त कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि शिक्षक, कर्मचारी सभी मिलकर विश्वविद्यालय को ऊंचाइयों तक पहुचायेंगे। तथा विश्वविद्यालय को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणीय स्थान पर ले जाने का पूरा प्रयास करेंगे। समारोह में निर्वतमान कुलपति प्रो. ओपीएस नेगी को विदाई दी गयी और उनके द्वारा किये गये कार्यों की सराहना की गयी। इस मौके पर कुलसचिव खेमराज भट्ट, निदेशक प्रो. पीडी पंत, परीक्षा नियंत्रक सोमेश कुमार, वित्त नियंत्रक एसपी सिंह सहित विश्वविद्यालय के सभी निदेशक, शिक्षक व कर्मचारी मौजूद थे।

कुलाधिपति, माननीय राज्यपाल से मिले कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं माननीय राज्यपाल महोदय से दिनांक 05 अगस्त 2025 को राजभवन में शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर राज्यपाल ने प्रो. लोहनी को कुलपति पद की जिम्मेदारी ग्रहण करने पर शुभकामनाएं दीं और अपेक्षा व्यक्त की कि वे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार, गुणवत्ता तथा अनुसंधान को प्रोत्साहित करते हुए विश्वविद्यालय को नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगे। माननीय श्री राज्यपाल महोदय ने कहा कि दूरवर्ती व ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंचाना मुक्त विश्वविद्यालय की प्रमुख भूमिका है और इस दिशा में ठोस प्रयास होने चाहिए। इस अवसर पर प्रोफेसर लोहनी द्वारा कुलाधिपति महोदय को विश्वास दिलाया गया कि वे उच्च शिक्षा में कुलाधिपति महोदय की अपेक्षाओं एवं दिए गए लक्ष्यों को सारगर्भित तरीके से पूर्ण करेंगे।

कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने की सीएम और उच्च शिक्षा मंत्री से मुलाकात

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने 4 अगस्त 2025 को प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी से शिष्टाचार भेंट की। माननीय मुख्यमंत्री जी ने कुलपति प्रोफ़ेसर लोहनी से विश्वविद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों के संचालन की जानकारी प्राप्त की तथा दूरस्थ शिक्षा में कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा और रोजगारपरक कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान देने हेतु निर्देश दिए। प्रो. लोहनी ने विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई प्रचार सामग्री उनसे साझा की और प्रदेश के कोने-कोने तक पहुंचने हेतु प्रचार अभियान में रेडियो, सोशल मीडिया के उपयोग व विश्वविद्यालय के विभागों द्वारा निर्मित वीडियो एवं विश्वविद्यालय की टीमों द्वारा राज्यभर में आयोजित प्रचार-प्रसार कार्यक्रमों की तैयारी के संबंध में जानकारी साझा की। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री माननीय डॉ. धन सिंह रावत से भी शिष्टाचार मुलाकात की। इस मौके पर उच्चशिक्षा मंत्री ने उन्हें इस जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं।

'हैलो हल्द्वानी' मोबाइल ऐप का मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने किया लोकार्पण

शिक्षक दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने मुख्यमंत्री आवास, देहरादून से उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो 'हैलो हल्द्वानी 91.2 एफ.एम.' के मोबाइल ऐप का लोकार्पण किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी, कुलसचिव डॉ. खेमराज भट्ट, विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य एवं बड़ी संख्या में शिक्षक-कार्मिक व विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यम से जुड़े रहे।

मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने इस अवसर पर कहा कि यह केवल एक तकनीकी उपलब्धि भर नहीं है,बल्कि उत्तराखंड की बदलती पहचान और आधुनिक सोच का प्रतीक भी है। रेडियो जैसे परंपरागत माध्यम को आधुनिक डिजिटल युग से जोड़ना वास्तव में परंपरा और नवाचार का अद्भुत संगम है। मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि प्रदेश के सभी 13 जनपदों में उच्च शिक्षा एवं कौशल विकास केंद्र स्थापित किए जाएंगे, जिनका संचालन व समन्वय उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय करेगा। उन्होंने कहा कि इन प्रयासों से राज्य के युवा नौकरी खोजने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले बनेंगे और यह आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अहम योगदान होगा। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि राजधानी देहरादून में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का प्रमुख केंद्र स्थापित किया जाएगा, जो शिक्षा, शोध, नवाचार और डिजिटल लर्निंग का हब बनेगा। उन्होंने कहा कि 'हेलो हल्द्वानी ऐप' उत्तराखंड की संस्कृति, बोली-भाषा और परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बनेगा।

उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने कहा कि मोबाइल ऐप के माध्यम से अब उत्तराखंड के दूर-दराज़ क्षेत्रों तक ज्ञान और शिक्षा पहुँच सकेगी। यह ऐप सीमाओं से परे जाकर पूरे देश और विश्व तक उत्तराखंड की शिक्षा व संस्कृति को पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगा। उन्होंने अपेक्षा जताई कि भविष्य में यह ऐप ऑनलाइन व्याख्यान, कैरियर काउंसलिंग, डिजिटल कोर्सेज़ और डिजिटल स्किल ट्रेनिंग जैसी सुविधाएँ भी शिक्षार्थियों को उपलब्ध कराएगा।

विश्वविद्यालय प्रचार-प्रसार पोस्टर का विमोचन करते मा. मुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री

विश्वविद्यालय द्वारा उत्तराखंड के विभिन्न क्षेत्रों में आई प्राकृतिक आपदाओं के मद्देनज़र मुख्यमंत्री राहत कोष हेतु सहायता राशि का चेक कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी को सौंपा। मुख्यमंत्री ने इस संवेदनशील पहल के लिए विश्वविद्यालय परिवार की सराहना की।इसके साथ ही मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी और उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की प्रचार सामग्री का अवलोकन भी किया तथा विश्वविद्यालय की शैक्षिक और सामाजिक गतिविधियों की सराहना की।मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने इस अवसर पर शिक्षक दिवस की सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों और नागरिकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं।कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सामुदायिक रेडियो 'हेलो हल्द्वानी' की विशेष उपलब्धियों का भी उल्लेख किया गया, जिनमें शैक्षिक कार्यक्रम, स्वास्थ्य जागरूकता, महिला सशक्तिकरण, कृषि एवं युवा संवाद तथा लोकसंस्कृति संरक्षण को विशेष रूप से सराहा गया। इस अवसर पर यूकॉस्ट के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पंत, कुलसचिव डॉ. खेमराज भट्ट, रेडियो प्रभारी प्रो. राकेश चन्द्र रयाल, गिरिजा शंकर जोशी, डॉ. सुभाष रमोला, डॉ. नरेंद्र जगूड़ी, ध्रुव रौतेला, राकेश भट्ट आदि मौजूद रहे।

यूओयू और आईआईटी रूड़की के बीच पाठ्यक्रम समझौता

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) रुड़की के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (MOU) पर हस्ताक्षर किए गए। यह साझेदारी राज्य में उच्च शिक्षा, अनुसंधान और तकनीकी नवाचार को नई दिशा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। कार्यक्रम में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. गिरिजा पांडे ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) रुड़की के निदेशक प्रो.कमल किशोर पंत का औपचारिक स्वागत किया। अपने संबोधन में प्रो. गिरिजा पांडे ने बताया कि यह MOU दोनों संस्थानों के बीच पाठ्यक्रम विकास, शोध-अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देगा। इसके माध्यम से नए अनुसंधान के अवसर खुलेंगे तथा UOU के छात्र एवं शोधार्थी इससे सीधे तौर पर लाभान्वित होंगे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) रुड़की के निदेशक प्रो.कमल किशोर पंत ने कहा कि कृषि एवं खाद्य उत्पादों से संबंधित तकनीक, जैविक नवाचारों तथा डेटा-सेंसर आधारित तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि पहाड़ी क्षेत्रों में लगातार हो रही भूस्खलन की घटनाओं का समाधान सेंसर आधारित तकनीक से खोजा जा सकता है, जिस पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) रुड़की कार्य कर रहा है। प्रो.पंत ने बताया कि संस्थान स्वदेशी तकनीक विकास तथा छात्रों के लिए ऑनलाइन एवं हाइब्रिड प्रशिक्षण को और अधिक प्रोत्साहित करेगा। उन्होंने उत्तराखण्ड के दूरस्थ क्षेत्रों की महिलाओं के लिए तकनीकी शिक्षा और स्वरोजगार को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। इस दिशा में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने बताया कि विश्वविद्यालय भविष्य में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) रुड़की की तर्ज पर एजुकेशनल मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर (ई.ऍम.आर.सी) स्थापित करने की योजना पर गंभीरता से कार्य कर रहा है। कार्यक्रम का संचालन प्रो.आशुतोष कुमार भट्ट ने किया, धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ.खेमराज द्वारा किया गया।

एनसीवीईटी के साथ पाठ्यक्रम समझौता

हल्द्वानी स्थित उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के लिए यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है कि राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीवीईटी) द्वारा 23 जुलाई 2025 को एक औपचारिक समझौते पर हस्ताक्षर के माध्यम से विश्वविद्यालय को अवार्डिंग बॉडी (AB) और ऐसेसमेंट बॉडी के रूप में ड्यूल रिकॉगनिशन स्टेट्स प्राप्त हुआ है।

इस मान्यता के प्राप्त होने के साथ ही उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय अब एनएसक्यूएफ (NSQF) से अनुपूरक, अनुमोदित अथवा अपनाई गई योग्यताओं के अंतर्गत शिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र/डिप्लोमा/योग्यता प्रदान करने, उनका मूल्यांकन करने तथा प्रमाणन की समस्त औपचारिक प्रक्रियाएँ संचालित करने हेतु अधिकृत हो गया है। यह कदम राज्य एवं देश में कौशल आधारित, रोजगारोन्मुखी शिक्षा को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जा रहा है।

इस ऐतिहासिक समझौते पर विश्वविद्यालय की ओर से तत्कालीन कुलपति प्रो. ओ. पी. एस. नेगी ने हस्ताक्षर किए। उनके नेतृत्व में प्राप्त यह उपलब्धि विश्वविद्यालय की अकादमिक विश्वसनीयता, प्रशासनिक दक्षता तथा व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती भूमिका को रेखांकित करती है।

यह उपलब्धि उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय को व्यावसायिक एवं कौशल शिक्षा के राष्ट्रीय मानचित्र पर एक सशक्त और भरोसेमंद संस्थान के रूप में स्थापित करती है।

पूर्व मुख्यमंत्री भगतसिंह कोश्यारी व निशंक जी के साथ कुलपति की भेंट

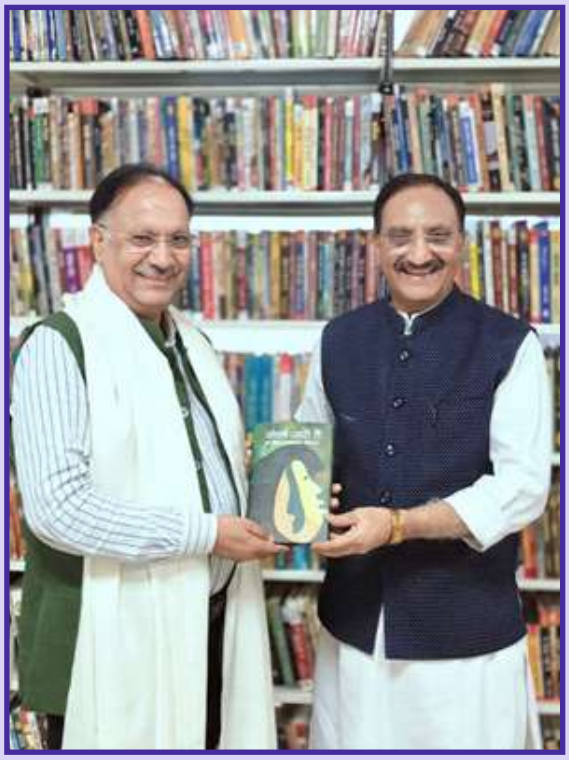

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने पूर्व केंद्रीय मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी से देहरादून में मुलाकात की।

पूर्व राज्यपाल व मुख्यमंत्री श्री भगतसिंह कोश्यारी जी के साथ कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने की शिष्टाचार मुलाकात।

यूकॉस्ट का वैश्विक आपदा प्रबंधन पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर नवीन चन्द्र लोहनी ने यूकॉस्ट द्वारा आयोजित तीन दिवसीय "आपदा प्रबंधन पर विश्व शिखर सम्मेलन" में प्रतिभाग किया। प्रो० लोहनी ने कहा कि आपदाकी परिस्थितियों में महिलाएँ केवल पीड़ित भर नहीं होतीं बल्कि वे समुदाय कोसंभालने, सूचनाएँ पहुँचाने, देखभाल करने और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया कोदिशा देने वाली सबसे मज़बूत कड़ी बन जाती हैं। 28 से 30 नवंबर 2025 को UCOST द्वारा "Pride of India: Science Expo 2025" का आयोजन ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी देहरादून में किया गया। इस राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का शुभारम्भ उत्तराखंड के माननीय मुख्यमन्त्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी द्वारा किया गया।

उच्चशिक्षा विभाग उत्तराखंड द्वारा 8-9 अक्टूबर 2025 को देहरादून में आयोजित चिन्तन शिविर में प्रतिभाग

उच्चशिक्षा विभाग उत्तराखंड द्वारा 8-9 अक्टूबर 2025 को देहरादून में उत्तराखंड के समस्त विश्वविद्यालयों, अनेक महाविद्यालयों, सहित आठ राज्योंके शिक्षाविदों एवं अकादमिकप्रशासकोंके साथ एक चिंतन शिविर का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय मुख्यमंत्रीएवं शिक्षा मंत्री द्वारा तथा समापन उत्तराखंड के माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति द्वारा किया गया । इसमे कार्यक्रम आयोजक संस्था और सहयोगियों द्वारा विभिन्न भूमिका में काम कर रहे शिक्षकों तथा प्रशासकों से राय ली गई । इस चिंतन शिविर में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर नवीन चन्द्र लोहनी द्वारा चिंतन शिविर में राज्य में उच्च दूरस्थशिक्षा में किस प्रकार भविष्य बेहतर हो सकता है तथा उच्च शिक्षा किस प्रकारदेश को आगे बढ़ाने में सहायक हो सकती है तथा ई-लर्निंग सिस्टम को किस रूप में आगेलाना चाहिए विषय पर अपने विचार व्यक्त किए गए।

पुस्तक वितरण कार्यक्रम

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी द्वारा प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर विद्यार्थियों को निःशुल्क पुस्तकों का वितरण किया। यूओयू ने गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित 118 वें अखिल भारतीय किसान मेले में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा स्टॉल लगाया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के बारे में छात्रों तथा अन्य लोगों को जानकारी दी गई । मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा पुस्तक वितरण मेले का भी आयोजन किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय की पुस्तकों का निःशुल्क वितरण किया गया। इस अवसर पर 160 छात्रों तथा अन्य लोगों को 300 से अधिक पुस्तकों का वितरण किया गया।

अपने दायित्वों का निर्वहन ही देश के लिए योगदान है: प्रो. लोहनी

यूओयू में मनाया तीन दिवसीय प्रगति उत्सव, ध्वजा रोहण व गीत संगीत कार्यक्रम के साथ हुआ समापन

69 वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर उत्तराखंड मुक्त विवि. में तीन दिवसीय प्रगति उत्सव का आयोजन हुआ। ध्वजा रोहण के उपरांत विवि. के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि जब हम विदेश की धरती पर रहते हैं तो आजादी का मतलब ज्यादा करीब से महसूस होता है, इसीलिए हमें इस आजादी को बरकरार भी रखना है और अपना काम भी ईमानदारी से करना है। देश भक्ति सिर्फ सीमा पर ही नहीं होती ,अपने पद पर रहकर अपने दायित्वों का ठीक से निर्वहन करना भी देश के लिए योगदान देना है। प्रो. लोहनी ने बताया कि दुनिया के नक्शे पर भारत इस वक्त मजबूत स्थिति में है। भारत की आजादी दुनिया के लिए मायने रखती है इसीलिए हमें भी विश्व को रोल मॉडल बनकर दिखाना होगा।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री द्वारा हर जिले में मॉडल शिक्षा के केन्द्र खोले जाने और उनका संयोजन उत्तराखंड मुक्त विवि को दिये जाने पर खुशी व्यक्त की गई। कार्यक्रम में पहरु पत्रिका के संपादक श्री हयात सिंह रावत ने पूरे कुमांउनी समाज की ओर से कुलपति का स्वागत करते हुए कहा कि क्षेत्रीय भाषा अस्मिता का विवि केन्द्र बनेगा, ऐसी हमें उम्मीद है। उन्होंने विवि की लाइब्रेरी में कुमांऊनी व गढ़वाली साहित्य की किताबें भी रखे जाने का प्रस्ताव दिया, जिससे पाठ्यक्रम बनाने में मदद ली जा सके। ध्वजारोहण के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरुआत विवि के संगीत विभाग के गायन कार्यक्रमों से हुई। जिसमें विवि के स्टाफ ने अपनी शानदार प्रस्तुतियां दीं। विवि के योग विद्यार्थियों द्वारा भी योग नृत्य प्रस्तुत किया गया। योग की एकल प्रस्तुति भी की गई ।अकादमिक व शिक्षणेत्तर विभाग द्वारा बहुत सी संगीत व कविता की प्रस्तुतियां भी हुईं ।इस मौके पर विवि के कुलसचिव खेमराज भट्ट, वित्त नियंत्रक सूर्य प्रताप सिंह, प्रो. पीडी पंत, प्रो, गिरिजा पांडे, प्रो. मंजरी अग्रवाल, प्रो. राकेश रयाल, प्रो. एमएम जोशी, कवि नरेन्द्र बंगारी, जन्मजेय तिवारी व विवि के शोधार्थी समेत पूरा विवि परिवार मौजूद रहा। दो दिवसीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की प्रदर्शनी का भी सभी ने अवलोकन किया। कार्यक्रम का संचालन डा.शशांक शुक्ला व डा, राजेन्द्र कैड़ा द्वारा किया गया।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में 20 वर्षों की प्रगति यात्रा का दूसरा दिन सितार और राग की सुरम्य धुनों से शुरू हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ गोविंद बल्लभ पंत संग्रहालय, अल्मोड़ा द्वारा आयोजित उत्तराखंड के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की पोस्टर प्रदर्शनी से हुआ, जिसका अवलोकन मुख्य अतिथि राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (एनटीए) के अध्यक्ष प्रो. प्रदीप कुमार जोशी और विवि के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी द्वारा किया गया। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम के नायकों को याद किया गया। राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा एनटीए के अध्यक्ष व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार जोशी ने अपने वक्तव्य में कहा कि छोटी-छोटी बातें, जिन्हें हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं;वही हमें एक अच्छा इंसान बनाती हैं। विश्वविद्यालय हर कर्मचारी की मेहनत से बनता है और यहां कोई छोटा-बड़ा नहीं है। समाज के हर तबके के लिए सोचना प्रत्येक शिक्षार्थी और शोधार्थी का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि शोध परियोजनाएं तभी सफल होती हैं, जब वे समाज से जुड़ी हों। विवि के आईटी एवं कंप्यूटर साइंस में प्रोफेसर व यूकॉस्ट के डायरेक्टर जनरल प्रो. दुर्गेश पंत ने विश्वविद्यालय की 20 वर्षों की यात्रा को विस्तार से रेखांकित करते हुए कहा कि किराए के कमरों से शुरू हुआ यह विश्वविद्यालय आज अपने विशाल भवनों में कार्य कर रहा है और प्रत्येक विद्याशाखा के लिए अलग भवन निर्मित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय को बी प्लस प्लस ग्रेड और 12(B) की मान्यता प्राप्त है। उन्होंने बताया कि यूओयू ने उन क्षेत्रों में भी प्रवेश दिलाया है, जहां कोई अन्य विश्वविद्यालय नहीं पहुंच पाया। आज पारंपरिक विश्वविद्यालयों में छात्रों का नामांकन घट रहा है, जबकि ओपन लर्निंग में बढ़ रहा है, क्योंकि भविष्य इसी का है। तकनीकी क्षेत्र में भी विश्वविद्यालय ने उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रवेश से लेकर अधिकांश कार्य ऑनलाइन मोड पर हो रहे हैं। सीमांत और सुदूर क्षेत्रों की तकनीकी चुनौतियों से निपटने के लिए प्रयास जारी है। उन्होंने कहा कि नॉलेज कॉरिडोर बनने से विश्वविद्यालय को बड़ा लाभ होगा और पाठ्यक्रमों को एआई-एनेबल यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित बनाकर शिक्षार्थियों तक पहुंचाया जाएगा।

विवि के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि विश्वविद्यालय अब युवावस्था में प्रवेश कर चुका है। अपने प्रचार-प्रसार को सुदूर क्षेत्र तक ले जाने के लिए हमें सोशल मीडिया का सहारा लेना होगा। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि विश्वविद्यालय का प्रत्येक सदस्य अपने फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया समूहों में पाठ्यक्रमों की जानकारी साझा करे तो यह बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंच सकेगा। शिक्षार्थियों को यह स्पष्ट रूप से बताना होगा कि प्रवेश कैसे लें, प्रवेश के बाद क्या होगा और डिग्री मिलने पर उनका भविष्य किस तरह बदलेगा। कार्यक्रम के दौरान रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल एवं वनमाली सृजन संयुक्त अभियान द्वारा एक पोस्टर का विमोचन किया गया। विश्व रंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड का भी शुभारंभ हुआ, जिसमें हिंदी विभाग के संकाय सदस्य उपस्थित रहे। द्वितीय दिवस के दूसरे सत्र में भारतीय वन अनुसंधान केंद्र, देहरादून के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. यशपाल सिंह ने कहा शिक्षा का काम हमें जगाना व सचेत करना है। शिक्षा में सबसे पहले अवधारणाएं स्पष्ट करनी होंगी। तभी शिक्षार्थियों को शिक्षा आनंददायी लगेगी। मानसखंड विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक प्रो.जीसीएस नेगी ने शोध समस्या पर बहुत विस्तार से बात रखी। उन्होंने कहा कि सत्य की तह तक पहुंचना ही शोध का एकमात्र उद्देश्य है। इस अवसर पर प्रो. पी.डी. पंत, कार्यक्रम की संयोजक प्रो. मंजरी अग्रवाल, प्रो. एम.एम. जोशी, प्रो. गिरिजा प्रसाद पांडे, प्रो. एम.एम. जोशी, प्रो. राकेश चंद्र रयाल, डा. शशांक शुक्ला, डा. नागेन्द्र गंगोला समेत विश्वविद्यालय परिवार के सदस्य और शोधार्थी मौजूद रहे।

शिक्षक दिवस हमें स्वयं का मूल्यांकन करने का अवसर देता है: प्रो. लोहनी

मीडिया सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो.गोविन्द सिंह हुए सम्मानित

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में उत्तराखंड की मीडिया सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर गोविंद सिंह को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रो. गोविंद सिंह ने विश्वविद्यालय से जुड़ी अपनी यादें साझा की और विश्वविद्यालय का आभार व्यक्त किया। उन्होंने अपने जीवनकाल की घटनाओं को सिलसिलेवार याद करते हुए अपने शिक्षकों का स्मरण किया और कहा कि बिना शिक्षकों के तराशे, एक छात्र कुछ भी नहीं है। उन्होंने अपने शिक्षकों रेवती देउपा और वीरेन्द्र मेंहदी रत्ता को विशेष तौर पर याद किया और कहा कि उनके निर्माण में उनके शिक्षकों का योगदान रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने प्रो. गोविंद सिंह का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने अपने अनुभवों से हमें शिक्षक

की भूमिका को बेहतर ढंग से समझने का अवसर दिया। प्रो. लोहनी ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए संदेश दिया कि उन्हें हमेशा यह देखना चाहिए कि वह शिक्षार्थी जो प्राकृतिक आपदा या संसाधनों की कमी के कारण पढ़ाई से वंचित रह जाता है, उसकी शिक्षा तक कैसे पहुँच बनाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि यह मुक्त और दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का पहला कर्तव्य शिक्षार्थी की बेहतरी है। उन्होंने सभी शिक्षकों से आह्वान किया कि वे अपने शिक्षार्थियों के प्रति इस तरह की प्रतिबद्धता रखें कि भविष्य में उन्हें भी इसी तरह सम्मानित किया जा सके। इस अवसर पर समारोह के संयोजक प्रो. पीडी पंत ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन को याद करते हुए कहा कि शिक्षक दायित्वों का निर्वहन करना सबसे सम्मानित पेशा है। सम्मान समारोह में विश्वविद्यालय के प्रो. गिरिजा प्रसाद पांडे, प्रो. एमएम जोशी, प्रो. रेनू प्रकाश, प्रो. मंजरी अग्रवाल, डॉ. भानू जोशी, प्रो. जीतेंद्र पांडे, डा. राजेन्द्र क्वीरा सहित अनेक शिक्षक उपस्थित थे।कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के डॉ शशांक शुक्ला ने किया।

79वें स्वतंत्रता दिवस पर मुख्यमंत्री ने दी यूओयू को बड़ी जिम्मेदारी

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में उस समय खुशियों की लहर दौड़ पड़ी, जब प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने स्वतंत्रता दिवस के अपने उद्बोधन में घोषणा की है कि राज्य के प्रत्येक जिले में उच्च एवं रोजगार परक शिक्षा के समग्र विकास और प्रचार -प्रसार के लिए विशेष केंद्र खोले जायेंगे, जिनका समन्वय उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय करेगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने अपने वक्तव्य में कहा कि राज्य सरकार की यह पहल राज्य के युवाओं को विशेष रूप से

बालिकाओं, महिलाओं को उच्च शिक्षा से जोड़ने और राज्य की आकांक्षाओं के अनुरूप कौशल विकसित करने के साथ-साथ दूरस्थ क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण रोजगारपरक शिक्षा पहुंचाने में मील का पत्थर साबित होगी। कुलपति प्रो. लोहनी ने बताया कि यह सुविधा उन लोगों के सपनों को पूरा करने में महत्वपूर्ण साबित होगी, जो अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए बाहर या नजदीकी शहरों तक भेज पाने में असमर्थ हैं । प्रो. लोहनी ने कहा कि पर्यटन, डिजिटल मार्केटिंग, हिमालयी अध्ययन, ए आई, आपदा प्रबंधन, हस्तकला और विरासत अध्ययन संरक्षण जैसे नए रोजगारपरक पाठ्यक्रमों को विकसित कर, राज्य के मानव संसाधन को कौशलपरक शिक्षा उपलब्ध कराना विश्वविद्यालय का पहला लक्ष्य है, ताकि उत्तराखंड का युवा आज की मांग के अनुसार अपने को तैयार कर सके।उन्होंने कहा कि उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से उच्च शिक्षा को भारतीय सेना से जोड़ने के लिए इसी माह बंगाल इंजीनियर्स रेजिमेंट में विशेष अध्ययन केंद्र से संबंधी एमओयू पर हस्ताक्षर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय चाहता है कि राज्य व देश के हर वर्ग से जुड़कर हर इच्छुक व्यक्ति तक उच्च शिक्षा व रोजगारपरक शिक्षा पहुँचायी जाए, जिसे राज्य सरकार के निर्देश और सहयोग से पूरा किया जाएगा। विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय सेवा निदेशालय के निदेशक प्रो गिरिजा पाण्डेय, कुसचिव खेमराज भट्ट, वित्त नियंत्रक एस पी सिंह, परीक्षा नियंत्रक डॉ. सोमेश कुमार, प्रचार-प्रसार प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रो. राकेश चंद्र रयाल आदि समस्त अधिकारियों, शिक्षकों व कार्मिकों ने इस जिम्मेदारी पर हर्ष जताते हुए राज्य सरकार का आभार जताया।

दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में यूओयू का कार्य बेहतरः सुबोध उनियाल

विश्वविद्यालय के 20वें स्थापना दिवस में आयोजित कार्यक्रम में बोले भाषा मंत्री

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) के 20वें स्थापना दिवस पर प्रदेश के भाषा, वन, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी शिक्षा मंत्री सुबोध उनियाल ने

कहा कि दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा के क्षेत्र में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने बेहतर कार्य किया है, इसके लिए विश्वविद्यालय बधाई का पात्र है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अपना रेडियो एप बनाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

विश्वविद्यालय सभागार में आयोजित स्थापना दिवस के कार्यक्रम में काबीना मंत्री सुबोध उनियाल ने कहा कि विश्वविद्यालय ने अपने 20 सालों में दूरस्थ्य शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रगति की यह रफ्तार आगे भी जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि मानव अपने मस्तिष्क का उचित उपयोग करके बेहतर परिणाम ला सकता है और दुनिया में नाम कर सकता है, हमें भी इसका अनुसरण करना चाहिए।

क्षेत्रीय विधायक डा. मोहन सिंह बिष्ट ने कहा कि आज दूरस्थ्य शिक्षा प्रदेश के दूरदराज के क्षेत्रों में भी सुगमता से पहुंच रही है। इसमें उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का सराहनीय प्रयास रहा है। उन्होंने 20 वर्ष की सफलता पर विश्वविद्यालय के समस्त लोगों को बधाई दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने बताया कि विश्वविद्यालय आगामी सत्र से होमस्टे पर रोजगारपरक पाठ्यक्रम संचालित करने जा रहा है। इसके अलावा हम शीघ्र ही कौशल विकास के नए पाठ्यक्रम भी शुरू करेंगे, जिससे कि यहां के लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा हो सकें। कुलपति ने यह भी बताया कि विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा का पाठ्यक्रम भी प्रारंभ कर रहा है। यह कार्य करने वाला उत्तराखण्ड का पहला विश्वविद्यालय होगा। विशिष्ट अतिथि यूकॉस्ट देहरादून के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पंत ने विश्वविद्यालय के स्थापना काल से अब तक हुए विकास पर चर्चा की और कहा कि अब हमें एआई टेक्नॉलॉजी के माध्यम से पाठ्यक्रमों को बेहतर बनाना चाहिए। निदेशक अकादमिक प्रो. पीडी पंत ने विश्वविद्यालय की प्रगति को लेकर विस्तृत रूप से चर्चा की। पूर्व निदेशक प्रो. जेके जोशी व प्रो. एचपी शुक्ला ने भी पुरानी यादों को ताजा करते हुए विश्वविद्यालय में किए गए कार्यों का उल्लेख किया और कहा कि विश्वविद्यालय की बेहतरी के लिए वह हमेशा तत्पर रहेंगे। कुलसचिव डा. खेमराज भट्ट ने सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। इस मौके पर विश्वविद्यालय के तीन पुरा छात्र डा. दीप चन्द्रा, डा. विपिन चन्द्रा एवं डा. सुधीर पंत को सम्मानित भी किया गया।

उच्च शिक्षा मंत्री एवं सांसद ने किया विकास कार्यों का शिलान्यास

दिनांक 05 अक्टूबर, 2025 को उत्तराखंड के उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत एवं सांसद श्री अजय भट्ट ने उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (UOU), हल्द्वानी में विभिन्न विकास कार्यों का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय को राज्य का नंबर-1 संस्थान बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण घोषणाएं भी कीं । कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने की। अपने संबोधन में माननीय मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने कौशल विकास को उच्च शिक्षा की प्राथमिकता बताया। मंत्री डा. धनसिंह रावत ने विश्वास जताया कि उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय निरंतर उत्कृष्ट कार्य कर रहा है । उनका लक्ष्य है कि विश्वविद्यालय वर्ष 2027 तक NAAC से A++ ग्रेड प्राप्त करे। माननीय उच्च शिक्षा मंत्री ने बताया कि सरकार अब तक उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय को ₹116 करोड़ की सहायता राशि दे चुकी है। उन्होंने सुझाव दिया कि विश्वविद्यालय को अर्धसैनिक बलों, सैनिकों और नागरिक पुलिस के जवानों को उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए संबंधित विभागों से एमओयू (समझौते) करने चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने शिक्षक अदला-बदली कार्यक्रम शुरू करने पर भी जोर दिया, जिसके तहत विश्वविद्यालयों के बीच शिक्षकों का पारस्परिक सहयोग बढ़ेगा। सांसद अजय भट्ट ने विश्वविद्यालय की निरंतर प्रगति की सराहना की और उम्मीद जताई कि यह विश्वविद्यालय आने वाले समय में देश भर में उत्तराखंड का नाम रोशन करेगा। कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने विश्वविद्यालय की पिछली उपलब्धियों और भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय राज्य के प्रत्येक वर्ग तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय द्वारा बैठक में प्रतिभाग

16 अक्टूबर 2025 को राजभवन में माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय लेफ्टिनेंट जनरल (से.नि.) श्री गुरमीत सिंह द्वारा प्रदेश के राज्य विश्वविद्यालयों के कुलपतियों संग बैठक की गयी। उन्होंने शिक्षा को समाज-राष्ट्र निर्माण का प्रमुख स्तंभ बताया । इस दौरान उच्च शिक्षा विभाग एवं शासन के अधिकारी उपस्थित रहे।

श्री राज्यपाल महोदय द्वारा दूरस्थ शिक्षा में तीव्रता से कार्य करने के लिए उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की सराहना की गई । इस अवसर पर विश्वविद्यालय के 'वन यूनिवर्सिटी वन प्रोजेक्ट' के अंतर्गत किए गए शोध कार्य की हिंदी में तैयार की गई कॉफी टेबल बुक सामग्री माननीय कुलाधिपति जी को प्रस्तुत की । माननीय कुलाधिपति महोदय ने विश्वविद्यालय के कार्यों की सराहना की एवं विश्वविद्यालय को तीव्रता से लक्ष्य प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया । इस बैठक में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर नवीन चन्द्र लोहनी ने बैठक हेतु निर्धारित विषयों पर प्रस्तुतिकरण दिया एवं विश्वविद्यालय की प्रगति हेतु निर्देश प्राप्त किए।

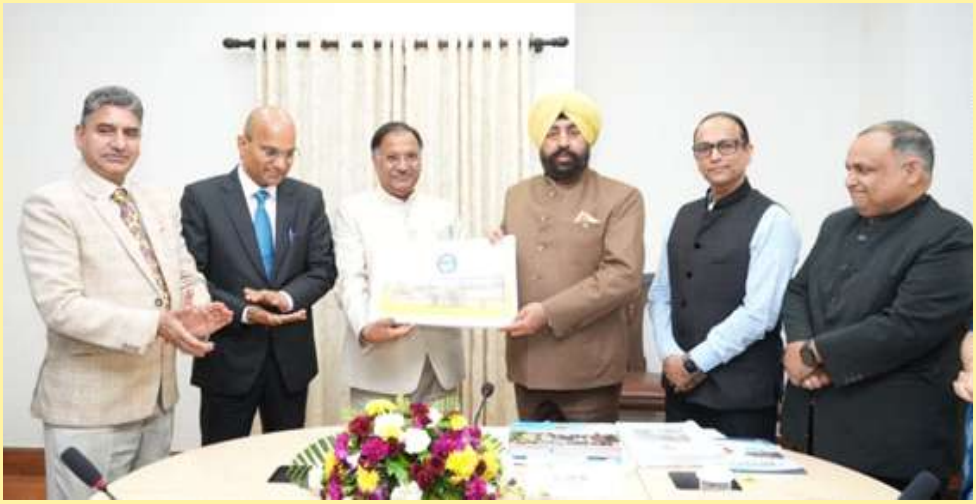

चौधरी चरणसिंह व माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय के कुलपति ने विश्वविद्यालय में दिया व्याख्यान

चौधरी चरणसिंह व माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपने शैक्षिक भ्रमण के दौरान मुक्त विश्वविद्यालय अपने व्याख्यान में कहा कि दूरस्थ एवं मुक्त विश्वविद्यालयों की वेबसाइट हमेशा अपडेटेड होनी चाहिए. क्योंकि स्टूडेंट के पास वही एक जरिया है विश्वविद्यालय की सूचनाएं प्राप्त करने का। वह विवि से वेबसाइट से ही कनेक्टेड है, इस गैप को हमे भरना है होगा तभी हम दूरस्थ शिक्षा के शिक्षार्थियों को विवि के केन्द्र में रख पाएंगे। प्रो.संगीता शुक्ला ने उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के सीका प्रकोष्ठ के द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में यह बात कही। शैक्षणिक संस्थानों की गुणवत्ता बढ़ाने के उपायों पर आयोजित इस व्याख्यान में विश्वविद्यालयों को समग्रता में आगे बढ़ाने पर विचार हुआ। उन्होंने व्याख्यान में आगे कहा कि विवि को नए पाठ्यक्रम भी लांच करने चाहिए। पाठ्यसामग्री समय-समय पर अपग्रेड होते रहना चाहिए तथा पाठ्यसामग्री बिल्कुल फोकस व नयी होनी चाहिए।

उन्होंने नैक की ग्रेडिंग बढ़ाने के लिए भी सुझाव दिए और कहा कि पुराने काम को सबसे पहले डाक्यूमेंट करें, हमें तभी मालूम चलेगा कि नया क्या-क्या करना है और साथ ही नैक का एसओपी सभी को पढ़ने की सलाह दी, ताकि नैक की तमाम प्रक्रियाओं को हम पहले समझ लें।

व्याख्यान में माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय सहारनपुर की कुलपति प्रो. विमला वाई ने कहा कि दूरस्थ माध्यम के विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम हमेशा सरल, सुग्राह्य व चित्रात्मक होना चाहिए जिससे शिक्षार्थी उसे आसानी से आत्मसात कर सकें। उन्होंने कहा कि नयी शिक्षा नीति को लागू करना परंपरागत विश्वविद्यालयों के लिए ही बहुत चुनौतीपूर्ण है तो दूरस्थ पद्यति को उसे लागू करने में ज्यादा मेहनत करनी होगी। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के लोकपाल प्रो. नरेन्द्र भंडारी ने कहा कि विज्ञान के विषयों में गुणवत्ता रखना ज्यादा बड़ी चुनौती है। उन्होंने समय के अनुसार डिजिटल जॉब चेन का हवाला देते हुए कहा कि समय के अनुरूप पाठ्यक्रमों में बदलाव लाना विवि का पहला मकसद होना चाहिए। अध्यक्षता कर रहे विवि के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि उत्तराखंड में भौगोलिक चुनौतियां बहुत है, लेकिन यही चुनौतियां दूरस्थ एवं मुक्त विश्वविद्यालय का मजबूत पक्ष हैं। परंपरागत विश्वविद्यालय ये काम नहीं कर सकते। उनके वहां उपस्थिति की बाध्यता है, लेकिन हम अपने गुणवत्ता के पाठ्यक्रम के साथ पहाड़ के सुदूर क्षेत्र तक शिक्षार्थी के पास आसानी से पहुंच सकते हैं। हमने विश्विद्यालय को डिजिटल रूप में इतना सक्षम बना लिया है कि शिक्षार्थी घर बैठे ही सारी सूचनाओं से लेकर प्रवेश ले सकता है।

प्रेमचंद भारतीयता एवं भारतीय मूल्य के रचनाकार हैं : प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाएं विभाग द्वारा प्रेमचंद जयंती की पूर्व संध्या पर आयोजित 'प्रेमचंद प्रसंग' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति और हिंदी साहित्य के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने अपनी अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि प्रेमचंद हमारे अपने जीवन के नजदीक के रचनाकार लगते हैं। यह भारत की कितनी बड़ी त्रासदी है कि हम आज भी कहते हैं कि प्रेमचंद आज प्रासंगिक हैं। हमें प्रेमचंद की रचनाओं में निहित घटनाओं से आगे बढ़ना है। प्रेमचंद की रचनाएं हमारे दिल को छूती हैं क्योंकि उनमें लोकतांत्रिक मूल्य निहित हैं। प्रेमचंद स्वतंत्र समाज का स्वप्न देखने के साथ-साथ अपनी रचनाओं में उसकी पूर्ण पीठिका रचते हैं। दुनिया भर में प्रेमचंद की प्रतिष्ठा उनके रचनात्मक अवदान के कारण है। वे अपनी रचनात्मक मूल्यों के कारण वैश्विक हैं। प्रेमचंद भारतीयता के बड़े रचनाकार हैं। यही वजह है कि उन्हें तमाम वैचारिकताओं ने अपना बनाने की कोशिश की है।

संगोष्ठी की मुख्य अतिथि प्रो. दिवा भट्ट ने कहा कि प्रेमचंद के पाठक दो तरह के हैं। एक प्रेमचंद को पढ़ने वाले और दूसरे प्रेमचंद को पढ़ाने वाले प्रेमचंद इसलिए दोनों को पसंद आते हैं कि उनके कथा साहित्य में आम जीवन की अभिव्यक्ति है। प्रेमचंद इस मायने में महत्वपूर्ण हैं कि उन्होंने कल्पना प्रधान साहित्य को यथार्थ की दहलीज पर ला खड़ा किया। अलंकार रहित सीधी सरल शैली सामान्य भाषा में कहन वैचित्र्य से उन्होंने जनता का मन मोहा। मानविकी विद्याशाखा के निदेशक प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे ने अपने विशिष्ट वक्तव्य में कहा कि बिना साहित्य के इतिहास को देखना बहुत कठिन होता है। प्रेमचंद की रचनाएं हमारे समाज की वैकल्पिक इतिहास हैं। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में समाज को एक खास तौर पर देखा और प्रस्तुत किया। प्रेमचंद के पात्र समाज के नायक के रूप हमारे सामने आते हैं। प्रेमचंद के हिंदी चुनने के पीछे हिंदी के समन्वय की भाषा होना है। यह अनायास नहीं है कि उन्होंने उर्दू छोड़ हिंदी चुना। कवि-आलोचक एवं हिंदी विभाग, कुमाऊं विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. शिरीष कुमार मौर्य ने प्रेमचंद के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि प्रेमचंद पर महानता थोपी गई। कई आलोचकों ने उन्हें अतिरेक में देखा, जबकि मैं प्रस्तावित करना चाहता हूं कि उन्हें साधारण के रूप में देखा जाना चाहिए। प्रेमचंद ने भाषा को साधारण बनाया। प्रेमचंद की रचनाओं में एक सांस्कृतिक मेलजोल दिखता है, जिनमें एक भाषाई तहजीब है। प्रेमचंद की स्त्री पात्र सताई जाती है, लेकिन हारती नहीं है। प्रेमचंद भाषा और विषयों में एक नए सौंदर्यशास्त्र की वकालत करते हैं। वक्ता डॉ. अनिल कुमार कार्की ने कहा कि प्रेमचंद का जीवन और उनके रचनाकर्म में एका है। डॉ. पुष्पा बुढलाकोटी ने प्रेमचंद पर अपनी बात रखते हुए कहा कि प्रेमचंद के पात्र गांव और शहर की सीमाओं को पाट देते हैं।

अतिथियों का स्वागत हिंदी विभाग के समन्वयक डॉ. शशांक शुक्ल ने किया। उन्होंने प्रस्तावना में कहा कि प्रेमचंद ने साहित्य के यथार्थ में एक पैराडाइम शिफ्ट किया। उनकी दृष्टि आधुनिक है। धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. राजेंद्र कैड़ा ने दिया। संचालन हिंदी विभाग के डॉ. कुमार मंगलम ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक सहित सभी विद्याशाखाओं के निदेशक प्रो मदन मोहन जोशी, प्रो राकेश चन्द्र रयाल, प्रो अरविन्द भट्ट, प्रो मंजरी अग्रवाल आदि विश्वविद्यालय के शिक्षक, कार्मिक एवं विश्वविद्यालय के शोधार्थी मौजूद रहे। पॉल ग्रुप के श्री नारायण पाल, बरेली कॉलेज के हिंदी के सहायक प्राध्यापक कवि संदीप तिवारी, अल्मोड़ा से डॉ ममता पंत, कवि नरेंद्र बंगारी, कुमाऊनी साहित्यकार दामोदर जोशी, पत्रकार जगमोहन रौतेला की कार्यक्रम में विशिष्ट उपस्थिति रही। इस अवसर पर शहर के विद्वतजन भी मौजूद रहे। इस संगोष्ठी में नागरी प्रचारिणी सभा के सौजन्य से प्राप्त प्रेमचंद की हस्तलिपि और तस्वीर को भी प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम में कुमाऊनी पत्रिका कुमगढ़ का लोकार्पण भी किया गया।

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने की पतंजलि योग पीठ में आचार्य बालकृष्ण से मुलाकात

पतंजलि योगपीठ के महामंत्री एवं पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा से वंचित जरूरतमंद लोगों तक एवं प्रदेश के कोने-कोने तक उच्च शिक्षा पहुंचाने हेतु उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की सराहना की। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.नवीन चंद्र लोहनी ने पतंजलि योगपीठ में आचार्य जी से भेंट कर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर वार्ता की एवं कई महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त किए। उत्तराखण्ड में दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय और पतंजलि विश्वविद्यालय के बीच एम०ओ०यू० करने पर सहमति बनी। इस अवसर पर सहायक क्षेत्रीय निदेशक रुड़की डॉ.बृजेश बनकोटी और मोहन चंद्र पांडे उपस्थित रहे।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नवाचार व समता पर कुलपतियों की गोलमेज बैठक

डॉ० बाबासाहेब आम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, अहमदाबाद द्वारा ''मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नवाचार और समता पर प्रौद्योगिकी और सूक्ष्म-प्रमाणपत्रों के प्रभाव का अन्वेषण'' विषय पर मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपतियों की गोलमेज बैठक का आयोजन किया गया। यह बैठक 12 और 13 नवंबर 2025 को अहमदाबाद में आयोजित की गयी। इसमें बैठक में यूओयू के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी, प्रोफेसर पीटर स्कॉट, अध्यक्ष एवं सीईओ, कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (सीओएल) तथा गुजरात के उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री भी उपस्थित रहे।

हैलो हल्द्वानी रेडियो ऐप के सुभारंभ को लेकर माननीयों के संदेश

शिक्षक दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने मुख्यमंत्री आवास, देहरादून से उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो 'हैलो हल्द्वानी 91.2 एफएम.' के मोबाइल ऐप का लोकार्पण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि, यह केवल एक तकनीकी उपलब्धि भर नहीं है, बल्कि उत्तराखंड की बदलती पहचान और आधुनिक सोच का प्रतीक है। रेडियो जैसे परंपरागत माध्यम को आधुनिक डिजिटल युग से जोड़ना वास्तव में परंपरा और नवाचार का अद्भुत संगम है। यह रेडियो और विश्वविद्यालय सुदूर क्षेत्र के शिक्षार्थियों तक पहुंचने का प्रयास लगातार कर रहा है और सफलता प्राप्त कर रहा है।

उत्तराखंड के उच्च शिक्षा मंत्री डॉ धन सिंह रावत द्वारा उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में अलग-अलग भवनों के शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए संबोधित किया गया। इसके साथ ही विश्वविद्यालय से संचालित होने वाले सामुदायिक रेडियो हैलो हल्द्वानी के ऐप लॉन्च की बधाई दी तथा इस पहल को उन्होंने सुदूर क्षेत्र के शिक्षार्थी और समुदाय के लिए उपयोगी बताया। इस रेडियो के माध्यम से विश्वविद्यालय शिक्षार्थियों और समुदाय को सेवाएं देता रहेगा, ऐसी आशा उन्होंने जताई।

विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम में काबीना मंत्री श्री सुबोध उनियाल ने विश्वविद्यालय की 20 वर्षों की शैक्षणिक यात्रा और दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय आज अपने गौरवशाली इतिहास के 20 वर्ष पूरे कर रहा है। इस 20 वर्ष की यात्रा ज्ञान नवाचार और तमाम उपलब्धियों के माध्यम से इस यात्रा को एक प्रेरणादायक यात्रा बनाने का काम विश्वविद्यालय ने किया, इसके लिए आपको बहुत-बहुत शुभ कामनाएं। स्थापना से लेकर आज तक इस विश्वविद्यालय ने सुगम से लेकर दुर्गम क्षेत्रों तक उच्च शिक्षा को पहुंचाने का काम किया। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित होने वाले सामुदायिक रेडियो हैलो हल्द्वानी, जिसे अब ऐप पर लाने की पहल विश्वविद्यालय ने की है, जिसके चलते इस रेडियो को आज पूरे विश्व में कहीं भी सुना जा सकता है, यह सराहनीय है।

सीमान्त पर्वतीय जनपद बाल विज्ञान महोत्सव में कुलपति ने की भागीदारी

पीएमश्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय, गुप्तकाशी में आयोजित चतुर्थ सीमान्त पर्वतीय जनपद बाल विज्ञान महोत्सव का शुभारंभ माननीय मुख्यमंत्री जी की गरिमामय उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी ने प्रतिभाग किया, वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी जी ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

यह दो दिवसीय महोत्सव 15 एवं 16 अक्टूबर तक आयोजित किया गया है, जिसका उद्देश्य पर्वतीय क्षेत्रों के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में विज्ञान एवं नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करना है। महोत्सव का आयोजन उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यूकॉस्ट) द्वारा किया जा रहा है।

इस अवसर पर यूकॉस्ट के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पंत सहित अनेक वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

रजत जयंती महोत्सव में आयोजित प्रतियोगिताओं में यूओयू के शिक्षार्थियों ने किया प्रतिभाग

उत्तराखंड राज्य के रजत जयंती अवसर पर दिनांक 06 नवम्बर, 2025 को आयोजित हस्तशिल्प प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की छात्राओं ने उत्साह पूर्वक प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता का आयोजन ग्राफिक एरा डीम्ड विश्वविद्यालय, देहरादून में किया गया, जिसमें राज्य के विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों ने भाग लिया।प्रतियोगिता में प्रतिभागियों सुश्री चंद्रकला जोशी एवं सुश्री मनीषा जोशी ने उत्तराखंड की पारंपरिक कला, संस्कृति और स्थानीय हस्तशिल्प में ऐपण से संबंधित उत्पादों की सुंदर प्रदर्शनी प्रस्तुत की। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की टीम ने आकर्षक प्रस्तुति एवं नवाचारपूर्ण डिज़ाइनों के माध्यम से दर्शकों और निर्णायकों की सराहना प्राप्त की। प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों में सृजनशीलता, पारंपरिक कला के प्रति सम्मान और स्वरोजगारकी भावना को बढ़ावा देती हैं।कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों कोप्रमाणपत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम में गृह विज्ञान विभाग के शिक्षक डॉ०दीपिका वर्मा और डॉ० ज्योति जोशी ने भी प्रतिभाग किया।

कुमांऊनी में 'मन की बात' का पहली बार 'हैलो हल्द्वानी' 91.2 एफ.एम. पर हुआ प्रसारण

प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम का पहली बार कुमाऊँनी भाषा में प्रसारण उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के सामुदायिक रेडियो हैलो हल्द्वानी 91.2 एफ.एम. पर किया गया। इस पहल से स्थानीय भाषा और संस्कृति को बढ़ावा मिला है तथा ग्रामीण व दूरस्थ क्षेत्रों के श्रोताओं से कार्यक्रम का सीधा जुड़ाव स्थापित हुआ है।

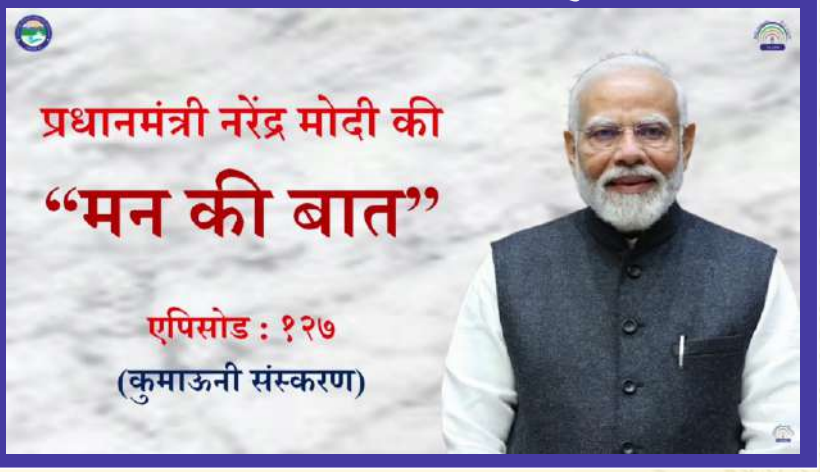

'राही मासूम रज़ा की विरासत' पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रोफेसर लोहनी ने किया प्रतिभाग

कश्मीर विश्वविद्यालय में प्रसिद्ध साहित्यकार, कवि और विचारक राही मासूम रज़ा की विरासत पर केंद्रित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 01-03 नवम्बर, 2025 को हुआ। इस संगोष्ठी में देश-विदेश के अनेक प्रतिष्ठित शिक्षाविदों, साहित्यकारों, विद्वानों और शोधार्थियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जम्मू-कश्मीर के माननीय उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा जी रहे, जिन्होंने अपने उद्बोधन में राही मासूम रज़ा को भारतीय अस्मिता, बहुलता और मानवता का सशक्त प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि राही साहब की रचनाएँ भारतीय समाज की आत्मा को समझने की कुंजी हैं।

टीवी,रेडियो पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि उत्तराखण्ड जैसे पर्वतीय राज्य में शिक्षा को रोजगारपरक बनाना विश्वविद्यालय की प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल है। उन्होंने कहा कि जो लोग किसी कारणवश अपनी उच्च शिक्षा पूरी नहीं कर पाए, उन्हें पुनः

शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय निरंतर प्रयासरत है। प्रो. लोहनी ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा ऑडियो, वीडियो एवं डिजिटल माध्यमों से शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले शिक्षार्थी भी बिना किसी बाधा के शिक्षा प्राप्त कर सकें। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की उपयोगिता से विद्यार्थियों को अवगत कराया जा रहा है, ताकि वे अपनी रुचि एवं भविष्य की संभावनाओं के अनुसार पाठ्यक्रम का चयन कर सकें। उन्होंने जानकारी दी कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट का हिंदी संस्करण भी प्रारंभ किया गया है तथा आगामी समय में शिक्षार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए उनकी भाषा में सूचनाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। शिक्षार्थी विश्वविद्यालय से टोल फ्री नंबर एवं ई-मेल के माध्यम से सीधे संपर्क कर सकते हैं।

21 सितम्बर, 2025 को आकाशवाणी दिल्ली द्वारा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर नवीन चन्द्र लोहनी को दूरस्थ उच्च शिक्षा एवं भारतीय भाषा की दशा और दिशा कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया एवं उनके विचार जाने गए।

"साप्ताहिक संवाद: दूरस्थ शिक्षा – उज्ज्वल भविष्य" शीर्षक दूरदर्शन समाचार देहरादून द्वारा प्रसारित यह कार्यक्रम दूरस्थ शिक्षा के महत्व, उपयोगिता और भविष्य की संभावनाओं को समझाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य यह था कि आम जनमानस, विशेषकर विद्यार्थियों और कार्यरत युवाओं को यह बताया जा सके कि बदलते समय और तकनीकी युग में दूरस्थ शिक्षा किस प्रकार शिक्षा को सुलभ, लचीली और समावेशी बना रही है। अपने संवाद में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी जी ने स्पष्ट किया कि दूरस्थ शिक्षा उन लोगों के लिए एक सशक्त माध्यम है जो भौगोलिक, आर्थिक या सामाजिक कारणों से नियमित शिक्षा प्रणाली से नहीं जुड़ पाते। कार्यक्रम में यह विषय प्रमुखता से रखा गया कि डिजिटल तकनीक, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और स्वाध्याय सामग्री के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा अब गुणवत्तापूर्ण और प्रभावी बन चुकी है। दूरस्थ शिक्षा केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि भविष्य की आवश्यकता है। यह शिक्षा और रोजगार के बीच की दूरी को कम करती है, आजीवन सीखने की अवधारणा को मजबूत करती है और "शिक्षा सबके लिए" के लक्ष्य को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी को 'सारस्वत सम्मान'

गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय एवं भारतीय हिंदी प्राध्यापक परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित हुआ। इस अवसर पर देशभर से आए हिंदी प्राध्यापकों, शोधार्थियों और साहित्यकारों ने सहभागिता की। इस अवसर पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. लोहनी को सारस्वत सम्मान प्रदान किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राणा प्रताप सिंह ने कहा, "हिंदी साहित्य ने स्वाधीनता संग्राम को शब्दों, विचारों और संघर्ष की लौ से जीवित रखा है। यह साहित्य समाज को नई दिशा देने वाला माध्यम रहा है।" उन्होंने हिंदी साहित्य के मूल संदर्भों और उसकी ऐतिहासिक भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीनचंद्र लोहनी ने क्षेत्रीय कवियों की सक्रिय भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्हें इस अवसर पर 'सारस्वत सम्मान' से सम्मानित किया गया।

अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में कुलपति लोहनी का प्रतिभाग

17 नवम्बर, 2025 को मास्कोस्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित 'वर्तमान विश्व में हिंदी' पर ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें कुलपति प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी द्वारा प्रतिभाग किया गया। संगोष्ठी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ और भारत की भाषा नीति के संदर्भ में हिंदी की स्थिति पर बातचीत कीऔर जापान के वरिष्ठ प्रोफेसर तोमियो मिजोकामी तथा रूस की प्रोफेसर ल्यूडमिला जी सहित दो भारतीय शिक्षकों के प्रश्नों से का प्रतिउत्तर दिया गया।

उत्तराखंड राज्य का 25वाँ स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजित

09 नवम्बर,2025 को उत्तराखंड राज्य के 25वें स्थापना दिवस के अवसर पर उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम में श्री राज्यपाल महोदय के अभिभाषण का सीधा प्रसारण किया गया । कार्यक्रम में उत्तराखंड की संस्कृति, एकता और गौरव का भावपूर्ण प्रदर्शन किया गया तथा राज्य आन्दोलनकारियों के बलिदान तथा राज्य आन्दोलन संस्मरण को व्यक्त किया गया। साथ ही विश्वविद्यालय की पिछले 20 वर्षों की प्रगति तथा राज्य की 25 वर्षों की उपलब्धियों को विस्तार से बताया गया।

स्थापना दिवस पर विश्वविद्यालय की 20 वर्षों की शैक्षणिक यात्रा पर हुई चर्चा

विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस कार्यक्रम में काबीना मंत्री श्री उनियाल ने विश्वविद्यालय की 20 वर्षों की शैक्षणिक यात्रा और दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अपने कार्यकाल में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों तक उच्च शिक्षा पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

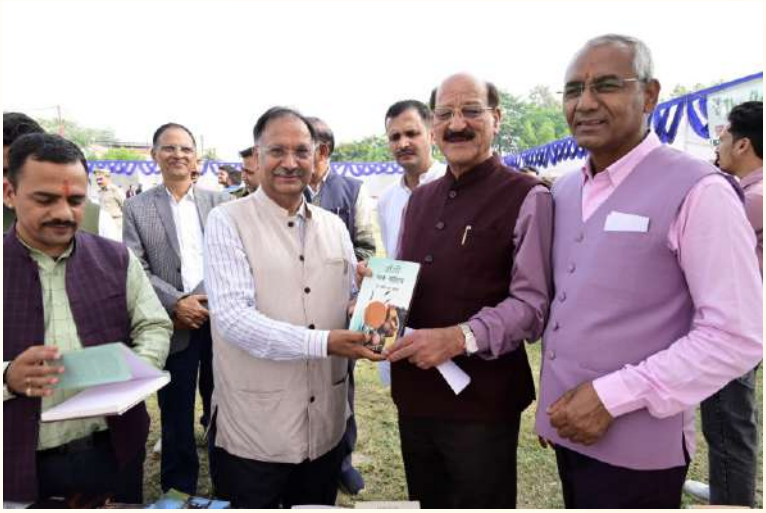

काबीना मंत्री ने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में की जा रही प्रगति आगे भी निरंतर जारी रहेगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रमों, नवाचारों एवं उपलब्धियों का प्रभावी प्रचार-प्रसार आवश्यक है, ताकि अधिक-से-अधिक विद्यार्थी इनसे जुड़ सकें और शिक्षा के अवसरों का लाभ उठा सकें। उन्होंने कहा कि मानव अपने मस्तिष्क का उचित उपयोग कर बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकता है और इसी सोच के साथ विश्वविद्यालय ज्ञान, शोध और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी भूमिका को और मजबूत कर सकता है। भाषा और साहित्य के संदर्भ में उन्होंने कहा कि साहित्य को आगे बढ़ाने में शिक्षण संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा साहित्यकारों के सम्मान से इस दिशा में सकारात्मक वातावरण बनता है। इस संदर्भ में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा की गई पहल का भी उन्होंने उल्लेख किया।

कार्यक्रम के माध्यम से विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों, सामाजिक दायित्व और दूरस्थ शिक्षा में योगदान को रेखांकित किया गया, जो आने वाले समय में विश्वविद्यालय के प्रचार-प्रसार को और सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

उत्तराखंड रजत जयंती पर राज्य स्तरीय संगीत वाद्ययंत्र प्रतियोगिता में वि. वि. के शिक्षार्थियों को प्रथम स्थान

"उत्तराखंड राज्य के रजत जयंती समारोह" के उपलक्ष्य में राज्य स्तरीय संगीत वाद्ययंत्र की एकल वादन प्रतियोगिता कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल द्वारा आयोजित की गई। मुख्य प्रतियोगिता में संगीत, नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के स्नातक तृतीय सेमेस्टर तबला के शिक्षार्थी श्री राहुल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। श्री राहुल द्वारा तबले पर तीनताल की प्रस्तुति दी गई, जिसमें संगीत, नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के स्नातक तृतीय सेमेस्टर के शिक्षार्थी श्री दिनेश कुमार द्वारा हारमोनियम पर संगत की गई। श्री राहुल ने सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा द्वारा आयोजित अंतर-विश्वविद्यालयी संगीत वाद्ययंत्र की प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया था। श्री राहुल को राज्य स्तरीय मुख्य संगीत वाद्ययंत्र की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पुरुस्कार स्वरूप रु0 21000/- की धनराशि से सम्मानित किया गया है।

लेखक गांव (देहरादून) के कार्यक्रम में कुलपति लोहनी का प्रतिभाग

कुलपति प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी द्वारा 04 नवम्बर को लेखक गांव (थानों देहरादून) में आयोजित साहित्य संस्कृति के' स्पर्श हिमालय महोत्सव-2025' में उत्तराखंड के माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी और देश के पूर्व शिक्षा मंत्री और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री डॉ रमेश पोखरियाल निशंक जी के साथ कुलपति लोहनी ने इस कार्यक्रम में प्रतिभाग किया । इस महोत्सव में प्रोफेसर लोहनी ने एक सत्र की अध्यक्षता भी की।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में ICAAAS-2025 अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का भव्य आयोजन

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में आस्था फाउंडेशन, मेरठ के सहयोग से आयोजित कृषि एवं संबद्ध विज्ञानों में नवीन एवं वर्तमान प्रगतियाँ (ICAAAS-2025) विषयक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ।

सम्मेलन के मुख्य संरक्षक एवं मुख्य अतिथि, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने अपने उद्घाटन उध्बोधन में कहा कि कृषि एवं संबद्ध विज्ञानों में नवाचार, सतत विकास और तकनीकी उन्नयन वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। ऐसे अंतरराष्ट्रीय मंच शोधकर्ताओं, शिक्षकों और विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर विचार साझा करने का सशक्त अवसर प्रदान करते हैं। इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहनी को चौधरी हंस सिंह अवार्ड से सम्मानित किया गया। विशिष्ट अतिथि डॉ.संजय कुमार, निदेशक, उत्तराखंड काउंसिल फॉर बायोटेक्नोलॉजी, उत्तराखंड सरकार, ने जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से कृषि विकास एवं रोजगार सृजन की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। वहीं डॉ.केसी.चंडोला, अध्यक्ष, उत्तराखंड आयुष मेडिकल कॉलेज एसोसिएशन, ने पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के समन्वय पर जोर दिया। सम्मेलन के आयोजन अध्यक्ष डॉ.एसपी.सिंह ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के उद्देश्यों और अपेक्षित निष्कर्षों की जानकारी दी। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ.आनंद सिंह जीना, प्रोफेसर एवं अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, गो. बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, ने अपने प्रेरक व्याख्यान में कृषि अनुसंधान, आनुवंशिकी सुधार और छात्रों की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की। इस अवसर पर सम्मेलन के मुख्य आयोजन सचिव डॉ.श्याम सिंह कुंजवाल ने सर्वप्रथम उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का परिचय प्रस्तुत किया।

सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखने के लिए भाषाओं का संरक्षण अनिवार्य: प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी

उत्तराखण्ड की भाषाओं पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

उत्तराखण्ड भाषा संस्थान, देहरादून और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में "कुमाऊनी भाषा" पर एक विचारोत्तेजक तकनीकी सत्र आयोजित किया गया। सत्र में कुलपति प्रो० नवीन चंद्र लोहनी ने विश्वविद्यालय स्थापना दिवस की सभी को बधाई दी और विश्वविद्यालय की सामाजिक भूमिका पर प्रकाश डाला। सत्र में सर्वप्रथम डॉ० चंद्रकांत तिवारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय बलुआकोट ने अपने वक्तव्य में कहा कि कुमाऊँ का जनमानस अपनी भाषा से गहराई से जुड़ा है। डा. हयात सिंह रावत, संपादक 'पहरू पत्रिका' ने कुमाऊंनी भाषा की वर्तमान स्थिति पर विचार करते हुए कहा कि चंद वंश के बाद इस भाषा को अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया। उन्होंने गुमानी पंत और श्री कृष्ण पांडे जैसे साहित्यकारों की रचनाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि कुमाऊनी भाषा हिंदी से भी अधिक प्राचीन और समृद्ध है। प्रो० प्रीति आर्या, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, अल्मोड़ा ने कहा कि भाषा का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि जब तक लोकभाषाओं का व्यावहारिक प्रयोग नहीं होगा, तब तक उनका अस्तित्व संकट में रहेगा। उन्होंने कहा कि भाषा हमारी सांस्कृतिक और भौगोलिक पहचान है, इसलिए इसके प्रति हीन भावना न रखते हुए इसका सम्मानपूर्वक प्रयोग करना चाहिए। इसके उपरांत डॉ० राजेंद्र कैड़ा ने प्रसिद्ध कवि बल्ली सिंह चीमा को शॉल भेंट कर सम्मानित किया। सत्र की अध्यक्षता कर रही प्रो० उमा भट्ट ने भाषाओं की विलुप्तता के लिए शहरीकरण और वैश्वीकरण को उत्तरदायी ठहराया तथा कहा कि अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखने के लिए भाषाओं का संरक्षण अनिवार्य है, अन्यथा आने वाली पीढ़ियों तक इनका हस्तांतरण संभव नहीं होगा। प्रो० भट्ट ने यह भी कहा कि उत्तराखण्ड एक बहुभाषी राज्य है और हमें राज्य की सभी भाषाओं कुमाऊनी, गढ़वाली, थारू, बोक्साड़ी, जौनसारी, जौनपुरी, रं, रंवाल्टी, थारूवाड़ी, मच्छी, जाड़ आदि को जानना आवश्यक है, क्योंकि हमारी संस्कृति और ज्ञान परंपराएँ भाषाओं से ही समृद्ध होती हैं। सत्र का संचालन हिंदी विभाग के शोधार्थी उमेश ध्यानी ने किया।

संगोष्ठी का दूसरा तकनीकी सत्र गढ़वाली भाषा पर केंद्रित था। इस सत्र में गढ़वाली भाषा के अंतर्गत आयोजित शोध-पत्र वाचन सत्र में कुमाऊनी साहित्य में नागपंथ का प्रभाव, गिरीश तिवारी 'गिर्दा' के 'नगाड़े खामोश हैं', क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण के लिए आवश्यक प्रयास, आधुनिकता के दौर में कुमाऊनी भाषा का बदलता स्वरूप, उत्तराखंड की भाषाएं, संरक्षण की चुनौतियां एवं संभावनाएं व उत्तराखण्ड की भाषाई समृद्धि, साहित्यिक परंपरा तथा भाषा संरक्षण के विविध पहलुओं पर गहन चर्चा हुई। मुख्य अतिथि गणेश खुगशाल 'गणि' ने कहा कि आज साहित्य के माध्यम से क्षेत्रीय भाषाओं की जीवंतता बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है। अध्यक्ष प्रोफ़ेसर देव सिंह पोखरिया ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि उत्तराखण्ड का भाषाई वैभव इसकी सांस्कृतिक पहचान का आधार है। उन्होंने कहा कि भाषा संरक्षण के लिए अकादमिक जगत, समाज और शासन सभी को मिलकर प्रयास करना होगा।

हिंदी दिवस पर गांधीनगर में चमका उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का परचम

कार्यक्रम का उद्घाटन केन्द्रीय गृह मंत्री एवं राजभाषा मंत्री श्री अमित शाह ने किया

महात्मा मंदिर कन्वेंशन एंड एग्जिबिशन सेंटर, गांधीनगर में आयोजित हिंदी दिवस 2025 एवं पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की प्रभावशाली उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने अपना प्रेरक और सारगर्भित वक्तव्य दिया, जिसे उपस्थित विद्वानों और प्रतिभागियों ने अत्यंत सराहा।

अपने संबोधन में प्रो. लोहनी ने हिंदी भाषा के महत्व, शिक्षा में उसकी बढ़ती भूमिका और डिजिटल युग में हिंदी के सशक्तिकरण पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि "हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और संवेदनाओं का सेतु है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका बढ़ता प्रयोग राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।" इस अवसर पर उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की प्रचार सामग्री का विमोचन एवं मंचासीन अतिथियों द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया। कार्यक्रम में देशभर से आए शिक्षाविदों, शोधार्थियों और राजभाषा अधिकारियों ने सहभागिता की और हिंदी को राष्ट्र की एकता के सूत्र के रूप में और सशक्त बनाने का संकल्प लिया।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने शुरू की हिंदी वेबसाइट शिक्षार्थी केंद्रित डिजिटल पहल

दो चरणों में पूरी वेबसाइट हिंदी में होगी उपलब्ध, विश्वविद्यालय का लक्ष्य छात्रों को मातृभाषा में सहज ऑनलाइन सेवाएं देना

हिंदी भाषा के उत्थान व प्रसार को लेकर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम के अवसर पर उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट का हिंदी संस्करण लॉन्च कर एक बड़ा कदम उठाया है। 12 सितंबर को विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित विशेष व्याख्यान कार्यक्रम में कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने वेबसाइट के हिंदी संस्करण का औपचारिक शुभारंभ किया।

कुलपति प्रो. लोहनी ने अपने विशेष व्याख्यान व हिंदी वेबसाइट लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान कहा कि विश्वविद्यालय का मूल उद्देश्य शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षा प्रदान करना है और यह वेबसाइट उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने कहा कि "उत्तराखंड एक हिंदी भाषी राज्य है। हमारी यह पहल छात्रों और शिक्षार्थियों को उनकी मातृभाषा में सुविधाएं उपलब्ध कराएगी। अब हर विद्यार्थी बिना भाषा की बाधा के विश्वविद्यालय की सभी सेवाओं और सूचनाओं तक आसानी से पहुंच सकेगा।" अब यह वेबसाइट पूरी तरह द्विभाषी होगी। प्रो. लोहनी ने बताया कि वेबसाइट को दो चरणों में तैयार किया जा रहा है। प्रथम चरण में होम पेज, प्रवेश प्रक्रिया से संबंधित महत्वपूर्ण निर्देश, विश्वविद्यालय से जुड़ी प्रमुख जानकारियां हिंदी में उपलब्ध करा दी गई हैं। द्वितीय चरण में विश्वविद्यालय की सभी आंतरिक प्रक्रियाएं जैसे प्रवेश, परीक्षा आवेदन, परिणाम, प्रमाणपत्र, छात्र सहायता सेवाएं आदि को भी पूर्ण रूप से हिंदी में उपलब्ध कराया जाएगा। इस प्रकार, विश्वविद्यालय की वेबसाइट अब हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में संचालित होगी, जिससे सभी शिक्षार्थी अपनी सुविधा अनुसार भाषा चुन सकेंगे। प्रो. लोहनी ने कहा कि यह विश्वविद्यालय की तरफ से डिजिटल क्रांति में शिक्षार्थी केंद्रित एक महत्वपूर्ण पहल साबित होगी।

कुलपति लोहनी ने कहा कि यह पहल डिजिटलाइजेशन के प्रयासों को और मजबूती देगी। हिंदी में वेबसाइट उपलब्ध होने से दूरदराज के छात्रों को विशेष लाभ मिलेगा। यह कदम शिक्षा में समान अवसर सुनिश्चित करने और 'शिक्षार्थी-केंद्रित' शिक्षा व्यवस्था को व्यावहारिक रूप देने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। इस अवसर पर मानविकी विद्याशाखा के निदेशक प्रो. गिरिजा पाण्डेय ने अपने विचार रखे, कार्यक्रम की रुपरेखा हिंदी विभाग के समन्वयक डॉ. शशांक शुक्ल ने रखी, कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनिल कार्की ने किया, धन्यवाद डॉ. राजेंद्र कैड़ा ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के निदेशक अकादमिक प्रो. पी डी पंत, कुलसचिव खेमराज भट्ट एवं शिक्षकगण मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. लोहनी ने श्रीलंका में अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी में किया प्रतिभाग

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने अपने श्रीलंका प्रवास के दौरान श्रीलंका मुक्त विश्वविद्यालय (The Open University of Sri Lanka) के कुलपति प्रो. पीएमसी तिलकरत्ने से शिष्टाचार भेंट की। प्रो. लोहनी श्रीलंका में आयोजित एक द्वि दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ता के रूप में प्रतिभाग करने गए थे। संगोष्ठी में प्रो. लोहनी ने एक सत्र की अध्यक्षता भी की। श्रीलंका मुक्त विश्वविद्यालय कोलंबो स्थित है और इसके देशभर में 27 अध्ययन केंद्र संचालित होते हैं। वर्तमान में यहां लगभग 48,000 विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

विश्व रंग श्रीलंका -2025 में बोलते हुए कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी

कुलपति प्रो. तिलकरत्ने ने देश-विदेश की प्रतिष्ठित संस्थाओं से शिक्षा प्राप्त की है तथा अनेक स्थानों पर महत्वपूर्ण शैक्षणिक एवं प्रशासनिक दायित्व निभाए हैं। उन्होंने भारत के पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से वाणिज्य में स्नातकोत्तर उपाधि (M.Com) प्राप्त की है।

इस अवसर पर दोनों कुलपतियों ने भारत और श्रीलंका के बीच उच्च शिक्षा, विशेष रूप से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में सहयोग के नए अवसरों पर चर्चा की। प्रो. लोहनी ने श्रीलंका मुक्त विश्वविद्यालय परिसर का अवलोकन भी किया और यहां की स्वच्छ, सुव्यवस्थित तथा आधुनिक भवन संरचनाओं की सराहना की।

श्रीलंका मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति से मिले कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय व बंगाल इंजीनियरिंग ग्रुप के बीच एमओयू

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और माननीय राज्यपाल ले. जनरल श्री गुरमीत सिंह की पहल पर सेना के रेजिमेंट मुख्यालयों में विशेष केंद्र खोले जाने की यह प्रक्रिया आरम्भ की गई। इसी क्रम में बंगाल इंजीनियरिंग ग्रुप एवं केंद्र और उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के बीच एमओयू हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो नवीन चंद्र लोहनी और कमांडेंट ब्रिगेडियर केपी सिंह की उपस्थिति में कुलसचिव और केंद्र के प्रशिक्षण अधीक्षक द्वारा रुड़की में समझौता पत्र पर दोनों संस्थानों की ओर से हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर समारोह में उपस्थित अधिकारियों का स्वागत करते

हुए क्षेत्रीय सेवाओ के निदेशक प्रोफेसर गिरिजा पांडे ने कहा कि यह विशेष केंद्र न केवल सैन्य अधिकारियों को उच्च शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराएगा, बल्कि आधुनिक दौर में सेना द्वारा अर्जित किए गए ज्ञान का लाभ लेकर अनेक कौशल विकास से जुड़े पाठ्यक्रमों को विकसित करने की पहल भी प्रदान करेगा।

समारोह में उपस्थित सेनाधिकारियों को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. लोहनी ने कहा कि विश्वविद्यालय का लक्ष्य उन लोगों तक पहुंचना है, जो अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए उच्च शिक्षा पाना चाहते है। सेना के जवान और अधिकारी इस विशेष अध्ययन केंद्र के खुलने से अपने परिसर में ही उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। विश्वविद्यालय इस समय स्नातक और परास्नातक स्तर के अनेक पाठ्यक्रम चला रहा है जिसका लाभ सैनिक और उनके परिवार के सदस्य ले सकते हैं। विश्वविद्यालय ने शहीद सैनिकों की विधवाओं को फीस में छूट देने की योजना भी इस केंद्र के माध्यम से बनाई है। राज्य के युवाओं को विशेष रूप से सैनिकों और उनके परिवारों को उच्च शिक्षा से जोड़ने और राज्य की आकांक्षाओं के अनुरूप कौशल विकसित करने के साथ-साथ दूरस्थ इलाकों तक गुणवत्तापूर्ण रोजगारपरक शिक्षा पहुंचाने में यह विशेष केंद्र मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि गढ़वाल राइफल्स और कुमाऊं रेजिमेंट के साथ भी इस तरह का एमओयू किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। कमांडेंट ब्रिगेडियर केपी सिंह ने इस प्रयास की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि सेना के जवानों- अधिकारियों को अपनी शैक्षणिक योग्यता को बढ़ाने का अवसर प्राप्त होगा। सेवा निवृत होने वाले सैनिकों को अपना कौशल विकास करने का भी मौका मिलेगा। इस विशेष केंद्र का संचालन केंद्र के सुप्रीटेंडेंट ट्रेनिंग कर्नल अभिषेक पोखरियाल के नेतृत्व में शिक्षा अधिकारी लेफ्टीनेंट कर्नल मधुर गुलेरिया को सौंपा गया।

यूओयू व केआरसी के बीच समझौता (एमओयू)

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) और कुमाऊँ रेजिमेंट सेंटर (केआरसी), रानीखेत के बीच 12 दिसम्बर 2025 को एक महत्वपूर्ण समझौता (MOU) हस्ताक्षरित किया गया। यह पहल सैन्य समुदाय, विशेषकर अग्निवीरों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और

आधुनिक कौशल विकास के नए अवसर उपलब्ध कराएगी। हस्ताक्षर के दौरान विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी के नेतृत्व में प्रमुख अधिकारी उपस्थित रहे। निदेशक प्रो. गिरिजा पांडे, कुलसचिव श्री खेमराज भट्ट, यूओयू के रीजनल डायरेक्टर रानीखेत डा. जेएस रावत, असिस्टेंट रीजनल डायरेक्टर श्रीमती रुचि आर्या इस अवसर पर उपस्थित थीं। कार्यक्रम का नेतृत्व केआरसी के कमांडेंट ब्रिगेडियर संजय कुमार यादव ने किया। उन्होंने कहा कि अग्निवीरों के उज्ज्वल भविष्य के लिए Skill Enhancement Courses अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय से विशेष रूप से State Management, Hospitality Management, तथा Digital Literacy एवं AI आधारित Courses विकसित कर उपलब्ध कराने का अनुरोध किया। उनका कहना था कि आधुनिक कौशलों से अग्निवीरों को सेवा अवधि के साथ-साथ सेवा उपरांत भी बेहतर करियर अवसर प्राप्त होंगे। इस महत्वपूर्ण समझौते पर उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल महोदय ने भी प्रसन्नता व्यक्त की और यूओयू तथा केआरसी दोनों को बधाई दी। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने आश्वस्त किया कि विश्वविद्यालय इन पाठ्यक्रमों के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता देगा तथा सैन्य समुदाय के शैक्षणिक उत्थान के लिए सतत सहयोग प्रदान करता रहेगा। यह समझौता सैनिकों और अग्निवीरों के लिए कौशल और शिक्षा का एक नया द्वार खोलने वाला कदम साबित होगा।

पेस्टल वीड कॉलेज देहरादून बना उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का अध्ययन केंद्र

पेस्टल वीड कॉलेज देहरादून और उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते के बाद पेस्टल वीड कॉलेज अब उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का आधिकारिक अध्ययन केंद्र बन गया है।

इस अवसर पर कॉलेज परिसर में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत जी थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि यह समझौता प्रदेश में उच्च शिक्षा के प्रसार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में एक अहम कदम है। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने की। कॉलेज के प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेम कश्यप ने ख़ुशी जाहिर करते हुए कहा कि यह समझौता कॉलेज के लिए काफ़ी लाभप्रद सिद्ध होगा। पेस्टल वीड कॉलेज के सचिव आकाश कश्यप जी और विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. खेम राज भट्ट जी ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए। कुलपति प्रो. लोहनी ने कहा कि इस सहयोग से शिक्षार्थियों को रोजगारपरक पाठ्यक्रमों और नई शैक्षिक संभावनाओं का लाभ मिलेगा। कॉलेज प्रबंधन ने आशा व्यक्त की है कि यह साझेदारी क्षेत्र के युवाओं के लिए नई राह खोलेगी। इस अवसर पर कॉलेज की प्राचार्य डॉ. अनीता वर्मा, विश्वविद्यालय के सहायक क्षेत्रीय निदेशक गोविन्द सिंह रावत, डॉ. सुभाष रमोला आदि मौजूद रहे।

हरिद्वार कारागार के साथ यूओयू का एमओयू

कारागार में कैदियों को शैक्षिक रूप से सक्षम बनाने व आजीविका के लिए आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय व जिला कारागार हरिद्वार के बीच समझौता पत्र (एओयू) पर हस्ताक्षर हुए। इस एमओयू के माध्यम से कारागार परिसर में कैदियों के लिए विशेष अध्ययन केन्द्र की स्थापना की जायेगी। जिससे कि जेल में निरूद्ध कैदी आसानी से उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। इस संबंध में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी की मौजूदगी में कुलसचिव खेमराज भट्ट व जेल अधीक्षक मनोज आर्या ने समझौता पत्र (एमओयू) पर 17 दिसम्बर 2025 को हस्ताक्षर किये। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का लक्ष्य उच्च शिक्षा से वंचित हर व्यक्ति तक पहुंचना है। उन्होंने कहा कि कैदियों को उच्च शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना और उनके जीवन में नई दिशा देने का पूरा प्रयास होगा। शिक्षित कैदी समाज में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं। जबकि कारागार अधीक्षक मनोज आर्या ने कहा कि शिक्षा के माध्यम से कैदियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाएगा। इस मौके पर यूओयू के सहायक क्षेत्रीय निदेशक बृजेश बनकोटी, डिप्टी जेलर श्वेता जोशी सहित कारागार प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

कुमाऊं विश्वविद्यालय और उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के बीच एमओयू

डी.एस.बी. परिसर नैनीताल बना यूओयू का अध्ययन केंद्र

उच्च शिक्षा को नई दिशा देने के उद्देश्य से कुमाऊं विश्वविद्यालय और उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के बीच एमओयू किया गया। इस समझौते के बाद कुमाऊं विश्वविद्यालय का डी.एस.बी. परिसर, नैनीताल अब उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का अध्ययन केंद्र बन गया है।

इस अवसर पर उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थियों को दोहरी उपाधि में जाने का अवसर मिलेगा। साथ ही यह पहल दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध होगी। प्रो. गिरिजा प्रसाद पांडे ने मुक्त विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपाधियों, व्यावसायिक तथा कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तृत परिचय दिया। कुमाऊं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीवान सिंह रावत ने कहा कि दोनों विश्वविद्यालयों के जुड़ने से प्रदेश की उच्च शिक्षा व्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन की संभावना है। एमओयू पर हस्ताक्षर उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव डॉ. खेम राज भट्ट और कुमाऊं विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव डॉ. एम. एस. मंन्द्रवाल ने किए। इस अवसर पर दोनों विश्वविद्यालयों के कुलपति, मुक्त विश्वविद्यालय के निदेशक क्षेत्रीय सेवाएं प्रो. गिरिजा पाण्डेय और सहायक क्षेत्रीय निदेशक रेखा बिष्ट भी मौजूद रहीं। गौरतलब है कि उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की पहल पर पिछले 20 साल में पहली बार कुमाऊं विश्वविद्यालय को अध्ययन केंद्र का दर्जा मिला है। इस एमओयू से शिक्षार्थीयों को न केवल उच्च शिक्षा के नए अवसर प्राप्त होंगे बल्कि दोनों विश्वविद्यालयों के बीच शैक्षणिक सहयोग भी मजबूत होगा।

भारतीय सेना में धर्मशिक्षक भर्ती के अंतिम चरण में पहुँचे यूओयू के कर्मकांड डिप्लोमा धारक २५ शिक्षार्थी

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कर्मकांड डिप्लोमा प्राप्त 25 शिक्षार्थियों ने भारतीय सेना में धर्मशिक्षक भर्ती प्रक्रिया के अंतिम चरण में पहुँचकर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। शनिवार को ताड़ीखेत व अल्मोड़ा कैंट क्षेत्र में शारीरिक प्रशिक्षण पूरा करने के बाद ये सभी शिक्षार्थी विश्वविद्यालय पहुंचे। विवि प्रशासन ने विशेष पहल करते हुए सभी को प्रोविजनल डिग्री एवं बोनाफाइड प्रमाण पत्र प्रदान किया, ताकि उनकी भर्ती प्रक्रिया में कोई बाधा न आए।

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने इस अवसर पर सभी शिक्षार्थियों का उत्साहवर्धन किया और धर्मशिक्षक भर्ती के अंतिम दो चरणों प्रमाण पत्र सत्यापन और साक्षात्कार में सफलता की शुभकामनाएं दीं। मेरठ, पौड़ी, अल्मोड़ा, हरिद्वार, मथुरा, चकराता और देहरादून से आए इन शिक्षार्थियों ने पहले उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्रीय अध्ययन पूरा किया और फिर उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय से कर्मकांड में डिप्लोमा प्राप्त किया। शिक्षार्थियों ने विवि की उच्च स्तरीय पाठ्यसामग्री और अपेक्षाकृत कम शुल्क की सराहना की। मोहन सारश्वत ने कहा कि "कर्मकांड का पाठ्यक्रम बेहद व्यावहारिक और गुणवत्तापूर्ण है, जिसकी वजह से हमने यहां दाखिला लिया।" इस अवसर पर विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. गिरिजा पाण्डेय, कुलसचिव डॉ. खेम राज भट्ट तथा परीक्षा नियंत्रक प्रो. सोमेश कुमार उपस्थित थे।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में पुस्तक मेले का आयोजन

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतर्गत पुस्तक मेले का भव्य आयोजन किया गया। पुस्तक मेले का उद्घाटन हल्द्वानी महापौर गजराज सिंह बिष्ट, लालकुआं बिधायक डॉ. मोहन सिंह बिष्ट, देश के प्रसिद्ध भाषाविद् प्रो. वी. रा. जगन्नाथन द्वारा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जगत सिंह बिष्ट, कुमाऊनी के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. देव सिंह पोखरिया तथा हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. जितेन्द्र श्रीवास्तव विशेष रूप से

उपस्थित रहे। पुस्तक मेले में उत्तराखण्ड की स्थानीय भाषाओं, लोकसंस्कृति, लोकसाहित्य, इतिहास एवं भाषायी परंपराओं से संबंधित पुस्तकों का व्यापक और समृद्ध संग्रह प्रदर्शित किया गया। कुमाऊनी, गढ़वाली, जौनसारी, रंग, नेपाली सहित अन्य हिमालयी भाषाओं और बोलियों पर आधारित साहित्य पाठकों और शोधार्थियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। उद्घाटन अवसर पर वक्ताओं ने पुस्तक मेले को भाषाई चेतना और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का सशक्त माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन न केवल पाठक–लेखक संवाद को बढ़ावा देते हैं, बल्कि लुप्तप्राय भाषाओं और लोकज्ञान को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।पुस्तक मेले में विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी, शिक्षार्थी तथा शहर के साहित्यप्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और स्थानीय भाषाओं से संबंधित पुस्तकों में गहरी रुचि दिखाई।

यूओयू के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने की यूपी के उच्चशिक्षा मंत्री से मुलाकात

उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री श्री योगेंद्र उपाध्याय से सर्किट हाउस मेरठ में दीक्षांत समारोह से पूर्व मुलाकात करते हुए माननीय कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी । कुलपति प्रो. लोहनी ने उन्हें उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्लय एवं राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश के मध्य भविष्य में संपन्न होने वाले एमओयू कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में 'हिमालय क्षेत्र के संरक्षण' पर विचार मंथन

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी एवं देवभूमि विज्ञान समिति, उत्तराखंड के संयुक्त तत्वावधान में 9 सितम्बर 2025 को विश्वविद्यालय परिसर में हिमालय दिवस का अयोजन किया गया। संगोष्ठी में हिमालयन क्षेत्र के संरक्षण पर विचार मंथन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो.पी.डी पन्त,निदेशक अकादमिक तथा बाह्य विषय विशेषज्ञों, डा. नरेन्द्र सिंह, वैज्ञानिक, आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) एवं वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान, देहरादून के वैज्ञानिक डा. गौतम रावत के स्वागत के साथ किया गया। प्रो. पी. डी. पन्त ने बताया कि कैसे हिमनदों के पीछे हटने, वनों की कटाई, अनियमित पर्यटन और जलवायु परिवर्तन ने बाढ़, भूस्खलन और जैव विविधता के नुकसान के खतरों को बढ़ा दिया है।

कार्यक्रम के सह-संयोजक, प्रो. कमल देवलाल, भौतिकी विभाग, यूओयू, हल्द्वानी ने इस आयोजन का विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की तथा हिमालय के महत्व पर ज़ोर दिया। प्रो. नवीन चंद्र लोहनी वर्चुअल माध्यम से इस सत्र में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि हिमालय गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी प्रमुख नदियों का उद्गम स्थल भी है, जो लाखों लोगों का जीवन-यापन करता है। इसके अतिरिक्त, यह जैव विविधता से समृद्ध है और कई समुदायों के लिए सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और पारिस्थितिक महत्व रखता है। कार्यक्रम में ऑनलाइन माध्यम से प्रदेश व देश के विभिन्न हिस्सों से 200 से अधिक छात्रों तथा शिक्षकों ने नामांकन तथा प्रतिभाग किया।

डॉ. नरेंद्र सिंह, वैज्ञानिक-एफ, आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज), नैनीताल (उत्तराखंड) ने हिमालय और उसकी चुनौतियाँ: एक जलवायु परिप्रेक्ष्य" विषय पर व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने घोषणा की कि हिमालय दुनिया का सबसे युवा और सबसे ऊँचा पर्वत श्रृंखला है, जो दक्षिण एशिया की जलवायु को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हालाँकि, बदलते जलवायु पैटर्न इस नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहे हैं। बढ़ते तापमान के कारण हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पीछे हट रहे हैं, जिससे नदियों को खतरा है।

डॉ. गौतम रावत, वैज्ञानिक-ई, वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान, देहरादून ने अपने व्याख्यान में जोर देकर कहा कहा कि हिमालय में हो रहा विकास क्षेत्र की पारिस्थितिकी और समुदायों पर गहरे प्रभाव डाल रहा है, जो अवसरों के साथ-साथ गंभीर चुनौतियाँ भी प्रस्तुत कर रहा है। सड़क, बांध और जलविद्युत परियोजनाओं जैसे तीव्र बुनियादी ढांचा विकास ने जहाँ आर्थिक संपर्क और रोजगार के नए विकल्प प्रदान किए हैं, वहीं इसने क्षेत्र की पारिस्थितिक नाजुकता को भी और अधिक बढ़ा दिया है। विकास गतिविधियों ने वन्यजीवों के आवास को खंडित कर जैव विविधता, विशेषकर विलुप्तप्राय प्रजातियों को खतरे में डाल दिया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो.गिरिजा पाण्डेय, निदेशक मानवीकी विद्याशाखा द्वारा की गई. प्रो. गिरिजा पांडे ने उद्बोधन में कहा कि हिमालय क्षेत्र के पारिस्थितिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने नाजुक पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा, जैव विविधता के संरक्षण तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए सतत विकास सुनिश्चित करने हेतु सामूहिक जिम्मेदारी निभाने पर विशेष बल दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मीनाक्षी राणा तथा डॉ. बीना फुलारा द्वारा किया गया। कुलसचिव खेमराज भट्ट द्वारा धन्यवाद ज्ञापन गया। कार्यक्रम में सह-संयोजक डॉ एचसी जोशी, प्रो. जितेंद्र पांडे, प्रो. आशुतोष भट्ट, प्रो. गगन सिंह डॉ. वीरेंद्र सिंह, डॉ. श्याम सिंह कुंजवाल डॉ.राजेश मठपाल, डा.प्रदीप पन्त, डा.कृतिका, तथा विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक मौजूद थे।

पर्यटन सांस्कृतिक आदान- प्रदान का माध्यम- प्रो. लोहनी

विश्व पर्यटन दिवस-2025 के अवसर पर उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, पर्यटन, आतिथ्य एवं होटल प्रबंधन विद्याशाखा (STHHM) द्वारा "पर्यटन और सतत परिवर्तन" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यटन क्षेत्र में हो रहे सतत परिवर्तनों, उनके सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं तथा समाज एवं पर्यावरण पर उनके प्रभावों पर विचार-विमर्श करना था।

स्वागत भाषण प्रो. एम.एम. जोशी, निदेशक (पर्यटन एवं आतिथ्य) द्वारा दिया गया। उन्होंने उपस्थित संकाय सदस्यों व विद्यार्थियों को सतत विकास की अवधारणा से परिचित कराया और हाल ही में चर्चित धराली घटना का उदाहरण देते हुए पर्यटन से जुड़े लाभ और हानियों पर प्रकाश डाला। डॉ. अखिलेश सिंह ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए उत्तराखंड में पर्यटन की व्यापक संभावनाओं के महत्त्व पर विद्यार्थियों को अवगत कराया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि पर्यटन केवल आर्थिक साधन नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक विकास का भी माध्यम है। उन्होंने चीन, स्विट्जरलैंड तथा यूरोपीय देशों के उदाहरणों के माध्यम से सतत पर्यटन की वैश्विक स्थिति पर चर्चा की और कहा कि हमें पर्यटन संसाधनों का उपयोग सतत विकास को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। मुख्य अतिथि आम्रपाली विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के प्रो. प्रशांत शर्मा ने अपने व्याख्यान में "वोकल फॉर लोकल" जैसे उदाहरणों के माध्यम से स्थानीय समुदाय की भागीदारी पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमें पर्यटन स्थलों को इस प्रकार सुरक्षित और स्वच्छ रखना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियाँ भी उनका आनंद उठा सकें। संगोष्ठी में पर्यटन उद्योग के विभिन्न पहलुओं जैसे रोजगार सृजन, पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय समुदाय की भागीदारी और जिम्मेदार पर्यटन पर भी गहन विचार-विमर्श हुआ। वक्ताओं ने यह भी कहा कि पर्यटन न केवल आर्थिक विकास को गति देता है बल्कि यह सांस्कृतिक और पर्यावरणीय चेतना को भी बढ़ावा देता है। कार्यक्रम के अंत में प्रो. पी. डी. पन्त ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया और सभी से अपील की कि जब भी हम किसी पर्यटन स्थल पर जाएँ तो उसे स्वच्छ, सुरक्षित और समृद्ध छोड़कर ही लौटें। इस अवसर पर प्रो. रेनू प्रकाश, प्रो. मंजरी अग्रवाल, प्रो. जीतेंद्र पांडे, डॉ शशांक शुक्ला, डॉ मनोज पांडे, सुश्री प्रिया बोरा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशीष टम्टा, सहायक प्राध्यापक, पर्यटन विभाग ने किया।

आईपीआर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

स्कूल ऑफ कंप्यूटर साइंस एवं आईटी, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) पर एक दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया।

कार्यशाला का शुभारंभ प्रो. आशुतोष कुमार भट्ट के स्वागत भाषण से हुआ। इसके उपरांत निदेशक प्रो. जितेन्द्र पांडे ने अपने संबोधन में वर्तमान युग में IPR के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के मुख्य वक्ता के रूप में श्री हिमांशु गोयल (वैज्ञानिक, UCOST देहरादून) ने IPR का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात श्री विकास असावत (पेटेंट प्रैक्टिशनर) ने पेटेंट फाइलिंग प्रक्रिया, पेटेंट योग्य एवं अयोग्य आविष्कार, ट्रेडमार्क तथा कॉपीराइट विषयों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार की सीट बेल्ट व एयरबैग दोनों के पेटेंट हैं। इसके अलावा उन्होंने कोका-कोला कैन का ओपनर, जिलेट के रेज़र, क्रिकेट के विकेट में हुए प्रमुख पेटेंट पर विस्तार से चर्चा की।

अंतिम सत्र में डा. आनंद पटवाल (डीन एकेडमिक्स, SGIMT काशीपुर) ने अकादमिक जगत में IPR की भूमिका पर उपयोगी विचार साझा किए।इस कार्यशाला में पाल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी हल्द्वानी, SGIMT काशीपुर, अमरपाली इंस्टीट्यूट हल्द्वानी तथा उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की।इस अवसर पर स्कूल ऑफ कंप्यूटर साइंस एवं आईटी की फैकल्टी डॉ. बलाम, डॉ. नीलीमा, डॉ. शिल्पा, ललिता, हिमानी, रिया एवं आशीष भी उपस्थित रहे।

हिंदी को पहले व्यवहार मे लाना जरूरी: प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी

हिंदी दिवस पर व्याख्यान श्रृंखला में जुड़े मुक्त विवि के कार्मिक

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने अपने रेडयो वार्ता में कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी के लिए तमाम कोशिश करना तभी कारगर व उचित होगा, जब हम पहले अपने व्यवहार में हिंदी को बरतेंगे। हिंदी दिवस के दिन आयोजित संवाद कार्यक्रम में उन्होंने हिंदी-राजभाषा, शिक्षण, रोजगार, भविष्य व चुनौतियां विषय पर आयोजित संवाद कार्यक्रम में अपनी बात रखी। कार्यक्रम में विवि के सभी निदेशक, शिक्षक व शिक्षणेत्तर कार्मिक जुड़े रहे। साथ ही राज्य भर से भी साहित्य व हिंदी के सुधीजन जुड़े रहे। अपने व्याख्यान में प्रो. लोहनी ने कहा कि 76 सालों में हिंदी को हम राजभाषा नहीं बना पाए हैं। हमारे न्यायालयों से लेकर मंत्रालयों व दफ्तरों के प्रपत्रों में अंग्रेजी हावी है। उन्होने अपने राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान के अनुभव साझा करते हुए कहा कि हमने उस वक्त होर्डिंग्स से लेकर प्रचारी सामग्री हिंदी में छापे जाने की बात मजबूती से रखी और उस पर अमल हुआ। राष्ट्रमंडल खेलो के जरिये हिंदी का संदेश पूरी दुनिया में गया। इस तरह के अभियान हमें पहल करके लेने होंगे, तभी हम हिंदी को पहले तो राजभाषा बना पाएंगे, फिर संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा। प्रो, लोहनी ने कहा कि उत्तराखंड मुक्त विवि के वेबसाइट के हिंदी संस्करण को जारी करने का मकसद भी यही है कि शिक्षार्थी में अपनी भाषा के प्रति अनुराग पैदा हो। शिक्षार्थियों द्वारा फार्म भरने में भी कई तरह की गलतियां हो जाती हैं। अपनी भाषा में जब हम कोई काम करते हैं तो गलतियां होने की आशंकाएँ कम हो जाती हैं। न केवल इससे विवि के शिक्षार्थियों को लाभ मिलेगा, बल्कि अपनी भाषा के प्रति आत्मगौरव व आत्मविश्वास भी आएगा ।हिंदी को लेकर आगे भी कई प्रयास किये जाएंगे, जिससे शिक्षा का समावेशी व लोकतांत्रिक बनाया जा सके। प्रो. लोहनी ने कहा कि सोशल मीडिया के आने के बाद की हिंदी को हमें खुले दिल से अपनाने की जरूरत है, हिंदी तभी समृद्ध होगी। जब तक शुद्धतावादी आग्रह रखेंगे, हिंदी के बोलने वाले कम होते जाएंगे ।उन्होंने हिंदी को बढ़ाने में प्रवासी भारतीयों के योगदान पर भी चर्चा की और बताया कि मेरठ विवि मे रहते हुए उन्होंने प्रवासी साहित्य को हिदी पाठ्यक्रम मे एक प्रश्न पत्र के रूप में शामिल किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय से प्रो. गिरिजा प्रसाद पांडे,प्रोफेसर रेनू प्रकाश, प्रो.जीतेन्द्र पांडे, प्रो. राकेश चन्द्र रयाल, डा. शशांक शुक्ला, डा.सुशील उपाध्याय , डॉ. राजेंद्र कैड़ा व डा. नरेन्द्र सिजवाली समेत कई प्राध्यापक व कर्मचारी मौजूद रहे।

विश्वविद्यालय लेगा आठ गांव गोद

राज्यपाल उत्तराखंड एवं उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के अग्रिम निर्देशों एवं मार्गदर्शन के क्रम में विश्वविद्यालय ने वर्ष 2013-14 में देहरादून तथा हल्द्वानी क्षेत्र में 5 गांव गोद लिए थे, जो वर्तमान में नगर क्षेत्र का हिस्सा बन चुके हैं। सामाजिक उत्तरदायित्व की इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए विश्वविद्यालय ने अब नई पहल की है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी की अध्यक्षता में निदेशक मंडल की बैठक आयोजित की गई, जिसमें यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि राज्य के विभिन्न हिस्सों में स्थित विश्वविद्यालय के 8 क्षेत्रीय कार्यालय अब 8 गांव गोद लेंगे। अब प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय अपने क्षेत्र के शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े 3 ऐसे गांवों की सूची विश्वविद्यालय को भेजेंगे। विश्वविद्यालय स्तर पर प्राथमिकता के आधार पर प्रत्येक क्षेत्र से एक-एक गांव का चयन किया जाएगा। चयनित गांवों के सर्वांगीण विकास के लिए विश्वविद्यालय नियमित रूप से जागरूकता कार्यक्रम, शिक्षा-संबंधी गतिविधियाँ, सामुदायिक सहयोग कार्यक्रम तथा नि:शुल्क पुस्तक वितरण जैसी पहल करेगा।ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में बेहतर समन्वय हेतु विश्वविद्यालय स्तर पर एक नामित प्रोफेसर इस कार्य की मॉनिटरिंग करेंगे तथा सहायक क्षेत्रीय निदेशकों के माध्यम से गांवों के विकास कार्यों का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन करेंगे।

विशेष व्याख्यान एवं डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शन में नृविज्ञानी प्रो. अंजली चौहान ने की शिरकत

उत्तराखंड मुक्त विवि के इतिहास विभाग व आंतरिक आश्वासन गुणवत्ता प्रकोष्ठ (सीका) द्वारा आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में प्रो. चौहान ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि जौनसार क्षेत्र के परंपरागत उत्सव और खेल जैसे बिस्सू और थोड़ा द गेम ऑफ़ द वारियर्स केवल सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं हैं, बल्कि ये स्थानीय समाज की जीवन-शैली, कृषि परंपरा और सामाजिक संरचना की गहरी समझ प्रदान करते हैं। उन्होंने बताया कि बिस्सू पर्व फसल उत्सव के रूप में बैसाखी के समय पांच दिनों तक मनाया जाता है और इसमें स्थानीय रीति-रिवाजों, पारंपरिक भोजन और औपचारिक समारोहों के माध्यम से क्षेत्रीय संस्कृति का संरक्षण होता है।

उन्होंने कहा कि आधुनिक समय में क्लाइमेट चेंज, शहरी दबाव और पर्यटन जैसे मुद्दों के मद्देनज़र इन परंपराओं का दस्तावेज़ीकरण और डिजिटल

संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्थानीय कला, वास्तुकला और पारंपरिक सामाजिक प्रथाओं को बढ़ावा देना और एथनो-टूरिज़्म के माध्यम से उनकी रक्षा करना भी आवश्यक है। प्रोफेसर अंजलि चौहान एक प्रतिष्ठित नृविज्ञानी, शोधकर्ता और लेखिका हैं। वे श्री जय नारायण पी.जी. कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय में नृविज्ञान विभाग की अध्यक्ष हैं और डी.एन. मजूमदार मेमोरियल म्यूज़ियम की निदेशक भी रह चुकी हैं। प्रो. चौहान ने अमेरिका, कनाडा, यूके, चीन, भूटान और श्रीलंका में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है और भारतीय संस्कृति, परंपराओं तथा जनजातीय जीवन पर कई राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय शोध-पत्र प्रकाशित किए हैं। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि भारत और उत्तराखंड की सांस्कृतिक विविधता के विभिन्न पहलुओं को छात्रों तक पहुंचाना और पाठ्यक्रमों में शामिल करना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है।

प्रो. गिरिजा प्रसाद पांडे ने कहा कि पाठ्यक्रम में स्थानीय समाज और संस्कृति को शामिल करना आवश्यक है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि एंथ्रोपोलॉजी के माध्यम से क्षेत्रीय विविधताओं, लोक देवताओं और परंपराओं को समझने में शोधकर्ताओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।कार्यक्रम का संचालन प्रो. एमएम जोशी ने किया। उन्होंने बताया कि डॉक्यूमेंट्री प्रस्तुति में थोड़ा खेल और बिस्सू पर्व के साथ-साथ यमुना नदी के किनारे स्थित कालसी और चकराता क्षेत्रों के सांस्कृतिक जीवन को प्रभावशाली ढंग से दिखाया गया। इस अवसर पर प्रो. रेनू प्रकाश, प्रो. राकेश रायाल, डॉ. शशांक शुक्ला, प्रो. मंजरी अग्रवाल, डॉ. लता जोशी, डॉ. आरुषि, डॉ. भाग्यश्री जोशी, डॉ. भूपेन सिंह समेत विश्वविद्यालय के अनेक सदस्य मौजूद रहे।

जनजाति गौरव दिवस टाउनहॉल कार्यक्रम आयोजित

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में एससी/एसटी प्रकोष्ठ एवं समाजशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 15 नवम्बर 2025 को आयोजित जनजाति गौरव दिवस टाउन हॉल कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। जनजाति गौरव दिवस का उद्देश्य समाज के हर वर्ग में आदिवासी नायकों के योगदान, उनके आदर्शों और जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता फैलाना है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी उनके त्याग और बलिदान से प्रेरणा ले सकें। इस कार्यक्रम का उद्देश्य जन जातियों की संस्कृति और योगदान को उजागर करना और अगली पीढ़ी को अपनी विरासत की रक्षा के लिए प्रेरित करना है।

मुख्य अतिथि मैत्री आंदोलन के प्रणेता एवं पद्मश्री से सम्मानित डॉ. कल्याण सिंह रावत ने कहा कि जनजाति समाज प्रकृति का आधार है, हमें इनका संरक्षण करना होगा। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि आदिवासी क्षेत्रों में आजीविका में सुधार की दिशा में जैव-संसाधन केंद्रों को मजबूत करना एक महत्वपूर्ण कदम है। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. नवीन चन्द लोहनीने कहा कि भारत के जनजातीय नायकों, उनकी संस्कृति और योगदान का सम्मान करने वाला एक राष्ट्रीय उत्सव है, यह दिवस बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय सभागार में किया गया। माननीय कुलपति, मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों एवं अन्य द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलन के साथ प्रारंभ कर अतिथियों का स्वागत प्रो.पी. डी. पन्त, निदेशक, अकादमिक एवं अध्यक्ष समान अवसर अनुभग ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि जनजातीय नायक भगवान बिरसा मुण्डा की जयंती पर उनके जीवन, संघर्ष और आदिवासी समाज के योगदान पर विशेष चर्चा की। साथ ही उन्होंने कहा कि जनजातीय संस्कृति, लोककला, नृत्य एवं परंपराओं के प्रदर्शन के माध्यम से समाज के गौरवशाली इतिहास को हमें जानना होगा।

कार्यक्रम की रूपरेखा एवं विषय प्रवेश प्रो. रेनू प्रकाश, निदेशक, समाज विज्ञान विद्याशाखा ने किया।उन्होंने कहा कि जनजातीय गौरव दिवस पर टाउन हॉल कार्यक्रम आमतौर पर जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों, विशेषकर बिरसा मुंडा के योगदान को मनाने, उनकी विरासत का सम्मान करने और जनजातीय समुदायों की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किए जाते हैं। विशिष्ट अतिथियों का परिचय डॉ. ज्योति रानी द्वारा किया गया।विशिष्ट अतिथि आभा गर्खाल ने कहा कि जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी और उपनिवेशवाद-विरोधी बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में भारत में हर साल 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस (जनजातीय गौरव) मनाया जाता है। जनजातीय समाज भारतीय समाज का अभिन्न अंग है। यह समाज प्रकृति पूजक रहा है। धन्यवाद ज्ञापन प्रो० पीके सहगल, निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा एवं नोडल अधिकारी एससी/एसटी प्रकोष्ट ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नागेंद्र गंगोला ने किया। समन्वयक और आयोजन समिति के सभी सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के निदेशक, प्राध्यापक डिगर सिंह फर्स्वाण, डॉ. ज्योति रानी, डॉ. राजेन्द्र क्वीरा, डॉ. गोपाल सिंह गौनिया, डॉ. नीरज कुमार जोशी, श्रीमती शैलजा, डॉ. किशोर कुमार, भावना धौनी, डॉ. नमिता वर्मा, डॉ. द्विजेश उपाध्याय, श्री तरुण नेगी, राजेश आर्या, मोहित, विभु काण्डपपाल, हरीश गोयल, सुनीता भाष्कर, रेनू भट्ट, ज्योति आदि थे।

विधिक सहायता केंद्र का बसानी गांव में जागरूकता कार्यक्रम

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के विधिक सहायता केंद्र लीगल एड क्लीनिक द्वारा हल्द्वानी के फतेहपुर में स्थित बसानी गांव में विधिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विधिक क्षेत्र के बैंकिंग क्षेत्र के,आर्थिक क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभाग किया गया और बसानी गांव के आम जनों के बीच विभिन्न विषयों पर विधिक और आर्थिक जानकारियां आम जनता तक संप्रेषित की गई ।

कार्यक्रम में बोलते हुए विधिक सहायता केंद्र के प्रभारी डॉ. दीपांकुर जोशी ने बसानी गांव के आम जनों के बीच में विभिन्न विधिक जानकारियों को रखा। साथ ही उन्होंने विधिक जानकारी या समस्याओं का निराकरण करने की प्रक्रियात्मक जानकारियां भी लोगों को दीं । जागरूकता कार्यक्रम में माननीय उच्च न्यायालय, नैनीताल के अधिवक्ता एडवोकेट पी. एस.रावत ने लीगल एड क्लीनिक, लैंड एक्विजिशन, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा से संबंधित,फॉरेस्ट लॉस से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर जानकारियां आम जनों तक संप्रेषित की ।कार्यक्रम में बैंकिंग क्षेत्र के विशेषज्ञ श्री एस.के. अग्रवाल ने बैंकिंग क्षेत्र में लगातार हो रहे फ्रॉड्स डिजिटल अरेस्ट के संदर्भ में बचाव से सम्बंधित जानकारियां आम जनों को दी । इसके अलावा प्रतिनिधिमंडल द्वारा ग्रामीण जनों की समस्याओं का भी निरा करण किया गया । गांव के लोगों ने विधि परामर्श भी प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में स्कूल ऑफ़ लॉ के समन्वयक डॉक्टर दीपांकुर जोशी,एडवोकेट पी. एस.रावत, सेवानिवृत्ति बैंकिंग अधिकारी श्री एस. के. अग्रवाल, चार्टर्ड अकाउंटेंट श्री लव मित्तल, अंतर्राष्ट्रीय एवं कानून विभाग से सुश्री स्वाति उपाध्याय, सुश्री अंशु जोशी, लोक प्रशासन एवं राजनीति विज्ञान विभाग से सुश्री रीताम्बरा नैनवाल, श्री दिग्विजय सिंह पथनी, जर्नलिज्म और मीडिया अध्ययन विभाग से श्री राजेंद्र सिंह क्वेरा,उच्च न्यायालय नैनीताल से एडवोकेट सिमरन कौर, एडवोकेट मुकेश सरकार ने प्रतिभाग किया।

भारतीय प्रेस दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा द्वारा भारतीय प्रेस दिवस पर 17 नवम्बर 2025 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात पत्रकार दिलीप चौबे थे। इस

अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार गणेश पाठक को सम्मानित भी किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. दिलीप चौबे ने कहा कि 16 वीं सदी से प्रिंट मीडिया का इतिहास शुरु होता है। देश में औपनिवेशिक सत्ता से संघर्ष का इतिहास रहा है। भारत में पत्रकारिता की शुरुआत आजादी की लड़ाई के साथ-साथ ही हुआ। जब भारत के अखबार तेजी से बढ़ रहे थे तो उसके नियमन के लिए प्रेस परिषद का गठन किया गया। तकनीकी के आगमन के बाद प्रिंट मीडिया के वर्चस्व को टेलीविजन ने तोड़ा। फिर सैकड़ों चैनल आ गए, फिर सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स आ गए, वेब पोर्टल्स आ गए। इन सबके आने से मीडिया का पूरा परिदृश्य ही बदल गया। मीडिया के लिए आज एक बड़ा खतरा खबरों से भ्रम पैदा करना, भड़काऊ खबरें देना है। अखबार अब कोरपोरेट कर्म हो गए हैं, इसीलिए जनहित व विज्ञापनदाताओं के हितों में एक असंतुलन पैदा हुआ है। पत्रकारों का मुख्य दायित्व है कि वह सत्ता से सवाल करें। कुलपति प्रोफेसर नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि मीडिया में तकनीकी के आने से पत्रकारिता का स्वरूप बहुत बदल चुका है, ऐसे समय में अभिव्यक्ति कौशल भी बचा रहे, जनसरोकार भी बचे रहें ये बहुत जरूरी है आज की युवा पीढ़ी के लिए। सोशल मीडिया में काम कर रहे लोगों के लिए भी बहुत जरूरी है कि वह नए कौशलों के साथ पत्रकारिता के मानकों को बनाए रखें। इस अवसर पर पत्रकारिता के चतुर्थ सेमेस्टर के शिक्षार्थियों को कार्यशाला कीसमाप्ति पर उन्हें प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

संगोष्ठी में विशिष्ट वक्ता के रूप में दैनिक जागरण के स्थानीय संपादक विजय यादव ने कहा कि प्रिंट मीडिया एक दस्तावेज की तरह है, जहां हर चीजे सहेजी हुई होती है। आज हम सूचना युग में हैं। सूचनाओं का समुद्र हमारे सामने है। ऐसे दौर में प्रिंट मीडिया के सामने बहुत चुनौतियां हैं, क्योंकि खबरों की तात्कालिकता बढ़ गई हैं; क्योंकि अखबार ने 24 घंटे बाद आना है, ऐसे में यह तय करना कि वह खबर जो कल सुबह तक बासी हो जाएगी; उसे किस तरह से परोसा जाए। सम्मानित हुए पत्रकार गणेश पाठक ने कहा कि पत्रकारिता एक ऐसे मुकाम पर आ चुकी है कि अब हर तीसरा व्यक्ति पत्रकार बन गया है, जिससे पत्रकार व पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर असर पड़ा है। पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा के निदेशक प्रो. राकेश चन्द्र रयाल ने भारतीय प्रेस दिवस के इतिहास पर विस्तार से बात रखी। कार्यक्रम का संचालन राजेन्द्र क्वीरा ने किया।

पत्रकारिता के शिक्षार्थियों की विशेष कार्यशाला आयोजित

विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा के शिक्षार्थियों की चार दिवसीय विशेष कार्यशाला 14 नवम्बर, 2025 से शुरू हुई। कार्यशाला में पत्रकारिता के पाठ्यक्म एमएजेएसी (MAJMC) चतुर्थ श्रेणी के शिक्षार्थियों को लघुशोध बनाने को लेकर विशेष गुर सिखाये गए। यूओयू के सभागार में 14 नवम्बर से शुरू हुई इस विशेष एवं आवश्यक कार्यशाला के प्रथम दिन वाह्य विशेषज्ञ डा. गरिमा राय ने लघु शोध निर्माण को लेकर विद्यार्थियों को अनेक जानकारी दी। उन्होंने संचार शोध, अर्थ व परिभाषा विषय क्षेत्र तथा शोध प्रविधि के बारे बताया और कहा कि इसके लिए शिक्षार्थी को गहन अध्ययन की आवश्यकता है। कार्यशाला में समाज विज्ञान की निदेशक प्रो. रेनू प्रकाश ने शिक्षार्थियों को सामाजिक अनुसंधान व शोध प्राविधि के बारे में बताया। जबकि पत्रकारिता विभाग के निदेशक प्रो. राकेश रयाल ने संचार शोधः विषय एवं विषय का चयन पर शिक्षार्थियों को विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लघु शोध बनाने से पूर्व से शिक्षार्थियों को अपने विषय का चयन विस्तृत जानकारी के साथ करना चाहिए, ताकि आसानी से लघु शोध बन सके। कार्यक्रम का संचालन पत्रकारिता विभाग के राजेन्द्र सिंह क्वीरा ने किया।

हौसलों की उड़ान पर एक दिवसीय कार्यशाला

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के दिव्यांग प्रकोष्ठ, विशेष शिक्षा विभाग एवं समान अवसर अनुभाग द्वारा "हौसलों की उड़ान" विषय पर एक दिवसीय कार्यक्रम विश्वविद्यालय सभागार में आयोजित किया गया। अपने स्वागत भाषण में प्रोफेसर डिगर सिंह फर्स्वाण , निदेशक शिक्षा शास्त्र द्वारा इस बात पर जोर दिया गया कि समावेशी वातावरण निर्माण शिक्षा क्षेत्र में अत्यंत आवश्यक है और इस पर ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि नयी शिक्षा नीति- 2020 में दिब्यांग बच्चों को सामान्य तौर पर सामान्य बच्चों के साथ आगे बढ़ाने के लिए कई तरह के प्रावधान दिए गए।

कार्यक्रम के अध्यक्ष कुलपति प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि वह विश्वविद्यालय स्तर पर दिव्यांगों के लिए मदद करने हेतु सहर्ष तत्पर हैं। विश्वविद्यालय में दिव्यांग शिक्षार्थीयों से आदर्श अध्ययन केंद्र हल्द्वानी में पाठ्यक्रम प्रवेश शुल्क नहीं लिया जाता है। दिव्यांग कर्मचारियों हेतु

बिल्डिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर में मोडिफिकेशन करने की जरुरत पड़ी तो उसे भी तो उस कार्य को भी पूर्ण किया जायेगा।

समान अवसर अनुभाग के प्रभारी प्रो पीडी पंत ने कहा कि आज जरूरत इस बात की है कि समाज में जागरूकता पूरी तरीके से फैले। प्रत्येक दिव्यांग मात्र एक शारीरिक कमी की वजह से उसके अत्यंत विशिष्ट गुणों को हम किसी भी तरीके से अनदेखा नहीं कर सकते व इन विशिष्ट गुणों में निखार लाने की जरूरत है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि आज एडवांस टेक्नोलॉजी के चलते वैज्ञानिकों ने दिव्यांग लोगों के लिए कई उपयोगी उपकरणों का आविष्कार किया है। जरूरत है वैज्ञानिकों द्वारा बनाई गई चीजों को इन तक पहुंचाने का और उनको उसके साथ दक्ष बनाने का। तीलू रौतेली पुरस्कार से सम्मानित सुश्री नीरजा गोयल जी ने अपने जीवन की कई विषम परिस्थितियों के बारे में बताते हुए कहा कि कैसे बचपन में पोलियो का गलत इंजेक्शन लग जाने की वजह से उनको दिव्यांग श्रेणी में शामिल होना पड़ा। लेकिन उन्होंने राष्ट्रीय खेलों में कई मेडल जीते। उन्होंने बताया कि उन्होंने बैडमिंटन, स्विमिंग, गिटार प्लेयिंग तथा बैडमिंटन में स्टेट चैंपियनशिप में कई नेशनल मेडल जीते। और न सिर्फ अपने बिजनेस को पूरी तरह संवारा, बल्कि उन्होंने समाज को भी जीने की राह दिखाई। तमाम पुरस्कारों से सम्मानित किए जाने के अलावा एक ऐसी महिला बनने का गौरव प्राप्त हुआ है, जिनकी वजह से योग नगरी ऋषिकेश के नवीन रेलवे स्टेशन में दो किलोमीटर का रैंप दिव्यांग लोगों के लिए बनाया गया। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने एक चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की है और आज ऐसे दिव्यांग लोगों को अपनी ओर से एडवांस वर्जन वाली 500 से ज्यादा व्हीलचेयर बंट चुकी है। दूसरी आमंत्रित दिव्यांग वक्ता सुश्री प्रीति गोस्वामी आज सफलताओं की कई कहानियां लिख चुकी हैं। और वह एक कई रेडियो कार्यक्रम और टीवी कार्यक्रमों में एंकर की भूमिका निभा चुकी है और वर्तमान में हाईकोर्ट में एक वकील के तौर पर कार्यरत है। और मोटर रैली में कई मेडल जीतने के अलावा उन्होंने लॉन बॉल में भी नेशनल और इंटरनेशनल टीम का प्रतिनिधित्व किया है। इस अवसर पर प्रीति गोस्वामी ने कहा कि यह मां-बाप की जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने दिव्यांग बच्चों को यह कभी एहसास न कराएं कि उनके अंदर कुछ कमी है।

इस मौके पर दिव्यांग सुश्री नीरजा गोयल, सुश्री प्रीति गोस्वामी, सुश्री मोहिनी कोरंगा, सुश्री चंद्रकला जोशी, श्रीमती निर्मला देवी, श्रीमती सरिता ज्याडा, श्री दिनेश प्रसाद ज्याडा, श्री पुरुषोत्तम मोगा का सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ राजेंद्र कैड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे दिव्यांग प्रकोष्ठ के प्रभारी सिद्धार्थ पोखरियाल ने विश्वविद्यालय में दिव्यांग छात्रों के लिए चलाई जा रही सुविधाओं का उल्लेख किया। इसके अलावा कार्यक्रम में दिव्यांग प्रकोष्ठ के सदस्य डा बालम दफोटी, डॉ नागेंद्र गंगोला,प्रोफेसर रेनू प्रकाश, प्रोफेसर राकेश चन्द्र रयाल, तरूण नेगी,भावना धोनी, डॉ नागेंद्र गंगोला, सुश्री अंकिता सिंह, सुश्री निशा राणा, श्रीमती पूजा शर्मा, श्रीमती रश्मि सक्सैना डॉ बबीता खाती समेत विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा विभाग के छात्र-छात्राएं व शिक्षक और कर्मचारी उपस्थित थे।

डिजिटल युग में मानवाधिकार पर वाद-विवाद प्रतियोगिता

मानवाधिकार दिवस के अवसर पर 10 दिसम्बर 2025 को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में मानवाधिकार एवं अंतरराष्ट्रीय कानून विभाग, राजनीति विज्ञान तथा लोक प्रशासन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में "डिजिटल युग में मानवाधिकारों की स्थिति : सशक्तिकरण या क्षरण" विषयक मंडल स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया।

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए प्रतिभागियों की जिज्ञासा, शोधपरक दृष्टिकोण और प्रस्तुति कौशल की सराहना की। उन्होंने कहा कि "डिजिटल युग में मानवाधिकारों की सुरक्षा आज की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है, ऐसे विमर्श युवाओं में जागरूकता और संवेदनशीलता विकसित करते हैं।" कार्यक्रम में विभिन्न महाविद्यालयों से आए प्रतिभागियों ने डिजिटल युग में मानवाधिकारों की बदलती चुनौतियों, अवसरों, केस लॉज़ और विधिक प्रावधानों के माध्यम से अपने तर्कों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों के उत्साह और विषय की गहन समझ ने कार्यक्रम को विशेष रूप से सार्थक बना दिया।

प्रतियोगिता परिणामों में वासुदेव लॉ कॉलेज की आराध्या ने पक्ष में प्रथम स्थान एवं प्रतीक भट्ट ने विपक्ष में प्रथम स्थान प्राप्त किया।उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, मानवाधिकार विभाग की अनिता रावत ने पक्ष में द्वितीय जबकि राजेंद्र प्रसाद लॉ कॉलेज की लक्षिता ने विपक्ष में द्वितीय स्थान हासिल किया। तृतीय स्थान पर राजेंद्र प्रसाद लॉ कॉलेज की लता मेवाड़ी (पक्ष) एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के मुकेश कुमार (विपक्ष) रहे। इस मौके पर प्रतियोगिता में शामिल सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए।कार्यक्रम के सफल आयोजन में विश्वविद्यालय के सभी संकाय सदस्यों, निर्णायक मंडल एवं छात्र-छात्राओं का विशेष योगदान रहा। प्रो. कमल देवलाल ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. दीपांकुर जोशी ने किया। संचालन डॉ. स्वाति जोशी तथा धन्यवाद डॉ. घनश्याम जोशी ने किया।

यूओयू कर रहा एक सप्ताह के भीतर डिग्री डिस्पैच

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने छात्रों को बड़ी राहत देते हुए उपाधि/प्रमाण-पत्र वितरण की प्रक्रिया को बेहद त्वरित बना दिया है। अब किसी भी छात्र द्वारा डिग्री हेतु आवेदन करने के केवल एक सप्ताह के भीतर ही विश्वविद्यालय से उपाधि/डिग्री डिस्पैच कर दी जा रही है।

विश्वविद्यालय परीक्षा विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार 24 जुलाई 2025 से अब तक कुल 6,619 आवेदनों पर कार्य किया गया है। इसमें जुलाई तक 5,679 और अगस्त माह में 848 उपाधियाँ/प्रमाण-पत्र भेजे जा चुके हैं। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि "छात्रों को समय पर डिग्री उपलब्ध कराना विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकता है। अब उन्हें महीनों तक इंतजार नहीं करना पड़ेगा, आवेदन करने के सिर्फ सात दिनों के भीतर ही उनकी डिग्री विश्वविद्यालय से डिस्पैच कर दी जाएगी।"

यूओयू में युद्ध स्तर पर प्रचार- प्रसार कार्य

विवि के गोद गांव बसानी से हुआ प्रवेश कार्यक्रम का शुभारंभ

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण करते ही राज्य के हर वंचित व्यक्ति तक उच्च शिक्षा पहुंचाने को लेकर एक अभियान शुरू किया, जिसके अंतर्गत वे प्रचार प्रसार सामग्री व कार्यक्रमों के माध्यम से हर व्यक्ति तक मुक्त व दूरस्थ शिक्षा का लाभ पहुँचाने का प्रयास किया गया। कुलपति ने प्रत्येक अनुभाग व विभागों के अंतर्गत संचालित कार्यक्रमों की जानकारी व उन कार्यक्रमों से रोजगार व स्वरोजगार के अवसरों के बारे में 5 मिनट के सूचनाप्रद वीडियो तैयार करने को कहा, जिनका निर्देशन कुलपति द्वारा स्वयं किया गया। कुलपति लोहनी ने

विश्वविद्यालय के सभी विद्याशाखाओं द्वारा तैयार प्रचार-प्रसार सामग्री से संबंधित वीडियो का प्रस्तुतिकरण का अवलोकन किया तथा साथ ही राज्य के 13 जनपदों में प्रचार प्रसार को लेकर होने वाले कार्यक्रमों की भी जानकारी ली और समीक्षा की। कुलपति ने विश्वविद्यालय में कार्यभार ग्रहण करते ही विश्वविद्यालय में छात्र संख्या को बढ़ाने पर जोर देने की बात की थी।कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय में संचालित प्रत्येक पाठ्यक्रम की जानकारी राज्य के हर व्यक्ति तक पहुंचे, जिसके लिए आज के समय में सोशल मीडिया बेहत्तर माध्यम है, इसलिए विश्वविद्यालय का प्रत्येक स्कूल/विद्याशाखा आपने विभाग स्कूल में संचालित कार्यक्रमों की जानकारी व उपयोगिता लोगों तक पहुंचाए, जिससे आम युवा भी इसका लाभ उठा सके और रोजगार व स्वरोजगार प्राप्त कर सके। विश्वविद्यालय के 14 विद्याशाखाओं में से 6 विद्याशाखाओं के वीडियो सर्वसम्मति से पास करके विश्वविद्यालय की वेबसाइट तथा विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर शेयर कर किए गए। विश्वविद्यालय के समस्त सहायक क्षेत्रीय निदेशकों को प्रचार-प्रसार हेतु उनके क्षेत्रीय कार्यालयों में भेजा गया। प्रवेश सत्र में राज्य के 13 जनपदों में प्रचार –प्रसार को लेकर 13 टीमें गठित कर प्रचार–प्रसार के अभियान चलाए गए,जिनके अंतर्गत 13 जनपदों में महाविद्यालयों/ विद्यालयों में प्रचार – प्रचार गोष्ठियां आयोजित की गयी, जिनमें संबंधित महाविद्यालय/ विद्यालय के विद्यार्थी, विश्वविद्यालय के संबंधित क्षेत्रीय कार्यलय के निदेशक, सहायक निदेशक व अध्ययन केंद्र के समन्वयक, परामर्शदाता, स्थानीय जन प्रतिनिधि व स्थानीय पत्रकारों को शामिल किया गया। विश्वविद्यालय के ये प्रचार-प्रसार कार्यक्रम तीन चरणों में सम्पन्न हुआ। प्रथम चरण के कार्यक्रम 3 अगस्त, रविवार से कुमाऊँ द्वार हल्द्वानी के पास विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गांव बसानी से शुरू हुआ, जिसे कुलपति जी ने स्वयं जाकर शुरू किया।

यूओयू में अध्ययन सामग्री निर्माण व गुणवत्ता पर कुलपति द्वारा की गयी समीक्षा

गुणवत्ता के साथ समय पर पाठयक्रम सामग्री तैयार करने के कुलपति ने दिए निर्देश

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने विश्वविद्यालय केविश्वविद्यालय में संचालित सभी कार्यक्रमों की अध्ययन सामग्री की गुणवत्ता, लेखन, निर्माण व वितरण को लेकर संबंधित सभी विद्याशाखा व विभागों के निदेशक,समन्वयक व शिक्षकों की एक बैठक ली, जिसमें सभी विषय समन्वयकों व निदेशकों से अपने-अपने विषयों व कार्यक्रमों की शेष अध्ययन सामग्री को तैयार कर मुद्रण हेतु देने को कहा। प्रत्येक विभाग व निदेशालय को कहा है गया कि वे अपने विभागों में किस तरह से रोजगार-स्वरोजगार व जनपयोगी कार्यक्रमों का संचालन शुरू कर सकते हैं, उस पर विचार करें। कुलपति प्रो. लोहनी ने कहा कि सभी विभाग व निदेशालय अपना एक वर्ष का अकादमिक कलेण्डर तैयार करें, जिससे वे सालभर अपने अकादमिक कार्यक्रमों का सम्पादन योजनाबद्ध ढंग से सम्पन्न कर सकें। इस अवसर पर निदेशक, अकादमिक प्रो. पी. डी. पंत और निदेशक, शोध एवं नवाचार निदेशालय प्रो. गिरिजा पाण्डेय ने अपने विचार रखे।

रामनगर में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का प्रचार -प्रसार कार्यक्रम

मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. एनसी लोहनी की उपस्थिति।

रामनगर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि विद्यार्थियों को उनकी सुविधा के अनुसार

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना ही उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य है। युवाओं के सर्वांगीण विकास एवं रोजगार सृजन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा कई रोजगारोन्मुखी एवं व्यावसायिक कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। दीक्षारंभ कार्यक्रम में कुलपति ने समस्त शिक्षार्थीयों को उनके भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. एमसी पांडेय द्वारा कुलपति का आभार व्यक्त किया गया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के सहायक क्षेत्रीय निदेशक रेखा बिष्ट भी कार्यक्रम उपस्थित रहीं।

इसके बाद माननीय कुलपति जी द्वारा अध्ययन केंद्र का निरीक्षण भी किया तथा वहाँ की समस्याओं को सुना गया। इस दौरान विश्वविद्यालय के समन्वयक डॉ दीपक खाती एवं सहायक समन्वयक डॉ प्रमोद पांडेय भी उपस्थित थे।

यूओयू का 10वॉ दीक्षांत समारोह 12 जनवरी 2026 को

राज्यपाल होंगे मुख्य अतिथि तथा उच्च शिक्षा मंत्री होंगे अति विशिष्ट अतिथि

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय का दसवां दीक्षांत समारोह 12 जनवरी 2026 को प्रातः 11 बजे से आयोजित किया जाएगा। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति ले. जनरल (सेनि.) श्री गुरमीत सिंह उपस्थित रहेंगे तथा राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत अति विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इस संबंध में राजभवन की ओर से औपचारिक स्वीकृति पत्र विश्वविद्यालय को प्राप्त हो चुका है।

समारोह में इस वर्ष उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धि हासिल करने वाले शिक्षार्थियों को सम्मानित किया जाएगा। विश्वविद्यालय के अनुसार स्नातक स्तर पर 10 तथा स्नात्तकोत्तर स्तर पर 18 शिक्षार्थियों को

गोल्ड मेडल प्रदान किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त दो प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों को कुलाधिपति मेडल—एक स्नातक और एक स्नात्तकोत्तर श्रेणी में—प्रदान किया जा रहा है।इसके साथ ही चार प्रायोजित मेडल भी चुनिंदा विषयों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिक्षार्थियों को प्रदान किए जा रहे हैं।दीक्षांत समारोह में पाँच शोधार्थियों को पीएच.डी. की उपाधि भी प्रदान की जा रही है।कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी के अनुसार दसवां दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय की शैक्षणिक यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। हमें हर्ष है कि माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय ने समारोह की शोभा बढ़ाने हेतु मुख्य अतिथि के रूप में आने की सहमति प्रदान की है। यह हमारे शिक्षार्थियों, शोधार्थियों और समस्त विश्वविद्यालय परिवार के लिए प्रेरणादायक अवसर है। विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार और शोध के प्रति प्रतिबद्ध है, और हमारी यह उपलब्धि उसी सतत प्रयास का परिणाम है।"

समाज कार्य सप्ताह का आयोजन

सामाज कार्य विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी द्वारा "6वें राष्ट्रीय सामाजिक कार्य सप्ताह" के उपलक्ष्य में क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभाग के छात्र-छात्राओं ने हल्द्वानी स्थित श्री आनंद वृद्धाश्रम, रामपुर रोड का भ्रमण किया। विषय समन्वयक, एमएसडब्लू डॉ. नीरजा सिंह ने कहा कि राज्य भर में इस तरह के आयोजन किये जा रहे है| समाज विज्ञान विद्याशाखा की निदेशक प्रो. रेनू प्रकाश के मार्गदर्शन में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस भावनात्मक अवसर पर छात्रों ने वृद्धजनों के लिए संगीतमय सांस्कृतिक प्रस्तुति दी, जिसे देखकर आश्रम का वातावरण आनंद और भावुकता से भर गया। साथ ही संकाय सदस्यों ने "बुजुर्गावस्था में स्वास्थ्य संरक्षण और निवारक उपायों" पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। वृद्धाश्रम की संस्थापिका एवं तीलू रौतेली पुरस्कार से सम्मानित श्रीमती कनक चन्द की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को और अधिक प्रेरणादायी बना दिया। साथ ही पर्यावरण संरक्षक श्री मदन मोहन बिष्ट जी की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और भी महत्वपूर्ण बना दिया|

उक्त कार्यक्रमों की श्रंखला में उत्तराखंड मुक्त विवि देहरादून में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी का आयोजन किया गया| जिसमें डॉ० भावना डोभाल ,डॉ० सुभाष रमोला ,डॉ० नरेन्द्र जगूड़ी एवं डॉ. गोविन्द सिंह रावत इत्यादि के साथ वि. वि. के शिक्षार्थीयों एवं कार्मिकों ने सहभागिता की| इस अवसर पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी का आयोजन भी किया गया।इस आयोजन में विभाग की कार्यक्रम समन्वयक डॉ. नीरजा सिंह के साथ-साथ सहायक प्राध्यापक श्रीमती कुशा सिंह और डॉ. पूजा हैड़िया भी उपस्थित रहीं। इस तरह का आयोजन न केवल शिक्षार्थियों के लिए अनुभवात्मक शिक्षा का अवसर प्रदान करता है, बल्कि समाज में बुजुर्गों के प्रति सम्मान और संवेदना की भावना को भी सशक्त करता है। इस अवसर पर निदेशक अकादमिक प्रो. पीडी पंत, विधि विभाग के निदेशक प्रो. कमल देवलाल, प्रो. रेनू प्रकाश, प्रो. डिगर सिंह फर्सवाण आदि शिक्षक उपस्थित रहे।

युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित हुईं प्रियंका शर्मा व गीता मठपाल

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की शिक्षिका प्रियंका शर्मा व गणित विभाग की शोधार्थी गीता मठपाल, को 20वीं उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सम्मेलन (USSTC), देहरादून (28 से 30 नवम्बर 2025) में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह आयोजन उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् (UCOST) द्वारा किया गया है। यह सम्मेलन वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, शिक्षार्थियों और अन्य हितधारकों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रगति, अनुसंधान और नवाचारों पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। हाल के वर्षों में, इन सम्मेलनों में जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन और शिक्षा जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने प्रियंका शर्मा व गीता मठपाल को बधाई देते हुए कहा कि यह सफलता विश्वविद्यालय तथा राज्य दोनों के लिए गौरव का विषय है।

अब जेल में बंद कैदी भी ले सकेंगे उच्च शिक्षा का लाभ

सेना के जवानों को उन्हीं के सेंटर पर पढ़ाई की सुविधा देगा यूओयू

यूओयू के क्षेत्रीय कार्यालय आठ पिछड़े गांव लेंगे गोद

पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि को बढ़ावा पर दें जोर : कुलपति प्रो. लोहनी

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में कृषि और संबद्ध विज्ञान में नवाचार और वर्तमान प्रगति विषय पर सातवां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हाइब्रिड मोड पर शुरू हो गया। मुख्य अतिथि विवि के

दूरस्थ शिक्षा ही उच्च शिक्षा और देश का भविष्य: प्रो. लोहनी

यूओयू में एक जनवरी से प्रवेश प्रक्रिया शुरू होगी

हल्द्वानी, वरिष्ठ संवाददाता। उत्तराखंड मुक्त विवि में शीतकालीन सत्र के लिए 1 जनवरी से प्रवेश की प्रक्रिया होगी। यह 31 जनवरी तक चलेगी। छात्र विवि की वेबसाइट

50 से अधिक पाठ्यक्रमों में 31 जनवरी तक ऑनलाइन होंगे प्रवेश

पहली बार कुमाऊंनी में सुनी गई पीएम के मन की बात

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने हैलो हल्द्वानी सामुदायिक रेडियो पर शुरू की पहल

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के सामुदायिक रेडियो हैलो हल्द्वानी 91.2 एफएम ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम के 126 वें संस्करण को पहली बार कुमाऊंनी

डॉ. प्रियंका शर्मा यंग वूमेन साइंटिस्ट अचीवमेंट

डिजिटल युग में मानवाधिकारों की सुरक्षा सबसे बड़ी चुनौती: प्रो. लोहनी

यूओयू के मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स

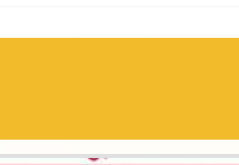

नेगा एजुकेशनल मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर

अब हिंदी में दिखेगी यूओयू की वेबसाइट

TOLL FREE

18001804025

Hello Haldwani 91.2 FM GET IT ON Google Play

Hello Haldwani 91.2 FM Download from App Store

संपादन मंडल

संरक्षक: प्रो. नवीन चंद्र लोहनी, कुलपति
प्रबंध संपादक : श्री खेमराज भट्ट, कुलसचिव
प्रधान संपादक: प्रो. राकेश चंद्र रयाल
संपादक : डॉ. शशांक शुक्ल
सहायक संपादक : राजेंद्र क्वीरा

Uttarakhand Open University
(Established by the Govt. of Uttarakhand vide Act No. 23 of 2005)
उत्तराखण्ड सरकार का एक मात्र मुक्त विश्वविद्यालय
University Road, Behind Transport Nagar
(Teen Pani Bypass), Haldwani -263139,Uttarakhand
Phone: 05946-286000, Fax : 05946-264232

/uoulive
/uoulive
/uouhldlive
/uoulive